प्रकाशन-सूची

२००६

"पुस्तकञ्च महेशानि यद्गृहे विद्यते सदा।
काश्यादीनि च तीर्थानि सर्वाणि तस्य मन्दिरे"।।

[भगवान् शिव ने कहा कि हे पार्वति! जिस घर में हमेशा पुस्तकें विद्यमान रहती हैं, वह घर मन्दिर के समान हो जाता है और उस घर में काशी आदि सभी तीर्थ निवास करते हैं।] (भूतशुद्धितन्त्र-१७।६)



पण्डित कमलापति त्रिपाठी शोध एवं प्रकाशन भवन



सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी - २२१००२

कौटिल्य के अर्थशास्त्र का अनुपम संस्करण

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय संस्कृत-वाङ्मय के ग्रन्थों के प्रकाशन के क्षेत्र में जो कीर्तिमान् स्थापित कर रहा है, उसी शृङ्खला को आगे बढ़ाते हुए **"कौटलीयार्थशास्त्र"** का प्रकाशन चार भागों में सम्पन्न किया गया है। इस संस्करण का पाठालोचन, पाठोद्धार तथा दो व्याख्याओं का लेखन पुण्यश्लोक **पण्डितराज श्रीराजेश्वर शास्त्री द्रविड** के द्वारा हुआ है। प्राच्य भारतीय नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र के विद्वान् भलीभाँति जानते हैं कि पण्डितराज का प्रवेश इन शास्त्रों में कितना गहरा था। इस विश्वविद्यालय का सौभाग्य रहा है कि सर्वतन्त्रस्वतन्त्र पण्डितराज की कृपा से कौटिल्य की विश्वविख्यात कृति **"अर्थशास्त्र"** पर उनकी लेखनी का निःष्यन्द प्राप्त कर सका। अर्थशास्त्र की परिधि में आनुषंगिक रूप से ऐसे विषयों, उपविषयों तथा विषयान्तरों का प्रवेश प्रसङ्गतः हुआ है, जिनकी पुङ्खानुपुङ्ख गुत्थियों का उद्धार पण्डितराज जैसी युगावतारी महाविभूति ही कर सकती थी।

अब तक "कौटलीयार्थशास्त्र" के जो चार भाग प्रकाशित हुए हैं, उनमें निम्नलिखित व्याख्याएँ समाविष्ट हैं–

१. **श्रीमूला-टीका**	– म.म.टी. गणपति शास्त्री प्रणीत।
२. **वैदिकसिद्धान्तसंरक्षिणी**	– पण्डितराज श्रीराजेश्वर शास्त्री द्रविड प्रणीत।
३. **जयमङ्गलाक्रोडपत्रम्**	– पण्डितराज श्रीराजेश्वर शास्त्री द्रविड प्रणीत।
४. **जयमङ्गला**	– श्रीशङ्करार्य प्रणीत।
५. **नीतिनिर्णीतिः**	– श्रीयोग्घमाचार्य प्रणीत।

उक्त व्याख्याओं से विभूषित और पण्डितराज द्वारा विश्लेषित **"कौटलीयार्थशास्त्र"** के जो चार भाग प्रकाशित हुए हैं, उनका विवरण एवं मूल्य निम्नलिखित है–

१. प्रथम भाग-प्रथम सम्पुट	–	१४०.००
२. प्रथम भाग-द्वितीय सम्पुट	–	११६.००
३. द्वितीय भाग-प्रथम सम्पुट	–	१६०.००
४. द्वितीय भाग-द्वितीय सम्पुट	–	९०.००

कौटलीयार्थशास्त्र के उक्त सभी भाग उपलब्ध तथा अवश्य सङ्ग्रहणीय हैं। इनका सम्पादन आचार्य **श्रीविश्वनाथ शास्त्री दातार** ने किया है।



विश्वविद्यालय के प्रकाशनों की पारम्परिक पृष्ठभूमि

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय का विश्वविख्यात **'सरस्वतीभवन'** पुस्तकालय हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की अगाध निधि है। इस पुस्तकालय में संगृहीत पाण्डुलिपियों के प्रकाशन के साथ ही साथ प्राच्य भारतीय विद्याओं की विभिन्न ज्ञान-शाखाओं के क्षेत्र में नूतन शास्त्रीय व्याख्याओं, शास्त्रीय ग्रन्थों की हिन्दी व्याख्याओं, नूतन सृजित कृतियों, विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे अनुसन्धानों, हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की विवरणपञ्जिकाओं, सारस्वती सुषमा प्रभृति अनुसन्धान-पत्रिकाओं तथा विश्वविद्यालय के पञ्चाङ्ग आदि का भी प्रकाशन इस विश्वविद्यालय के द्वारा सम्पन्न हो रहा है। अद्यावधि लगभग २८०० शास्त्रीय ग्रन्थों के प्रकाशन का सौभाग्य इस विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है।

यहाँ के प्रकाशनों को गरिमा प्रदान करने वाली विभूतियों में सर्वश्री **डॉ. जे.आर. वैलेंटाइन, जान म्योर, आर.टी.एच. ग्रिफिथ, डॉ. जी. थिबो, डॉ. ए. वेनिस, डॉ. गङ्गानाथ झा एवं म.म. गोपीनाथ कविराज** प्रभृति मनीषियों का योगदान सदा स्मरणीय रहेगा।

उसी गरिमापूर्ण एवं गौरवशाली परम्परा को आशातीत आयाम प्रदान करने में विश्वविद्यालय के मनीषी कुलपति **प्रो. अशोक कुमार कालिया जी** अहर्निश प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि १८६६ ई. से १९१७ ई. तक इस विश्वविद्यालय की पूर्व-संस्था **'राजकीय संस्कृत महाविद्यालय'** के द्वारा **'पण्डित-पत्रिका' (काशीविद्यासुधानिधिः)** का प्रकाशन होता रहा। इस पत्रिका में उस युग के विश्वविख्यात विद्वानों के निबन्ध तो प्रकाशित होते ही रहे, साथ ही उस युग में तिरोहित हो रहे बहुमूल्य ग्रन्थों का सर्वप्रथम प्रकाशन भी होता रहा। इस पत्रिका का प्रकाशन १९१७ ई. के बाद रुक गया। ऐसी स्थिति में विभिन्न शास्त्रों पर तत्कालीन मनीषियों द्वारा लिखे गये निबन्धों और पत्रिका में प्रकाशित ग्रन्थों का दर्शन तो दूर, उनका नाम-श्रवण भी दुर्लभ हो चला। यह बड़े हर्ष की बात है कि **'सरस्वतीभवन'** पुस्तकालय के पूर्व-पुस्तकाध्यक्ष **डॉ. विजयनारायण मिश्र** के अथक परिश्रम से उन्हीं के सम्पादन में संस्कृत में प्रकाशित कृतियों को **"पण्डित-परिक्रमा"** ग्रन्थमाला के अन्तर्गत एवं अंग्रेजी में प्रकाशित कृतियों को **"पण्डित रीविजिटेड"** ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित किया गया है। इन ग्रन्थमालाओं में १० ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है।

इसी प्रकार विश्वविद्यालय ने अपने विश्वविख्यात 'सरस्वतीभवन' पुस्तकालय में सङ्गृहीत लगभग १,१२,००० हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की 'विवरण-पञ्जिकाओं (कैटलॉग) के ३४ भागों का प्रकाशन सम्पन्न कराया है। विश्वविद्यालय की यह उपलब्धि संस्कृत-वाङ्मय के चिन्तन में निश्चय ही नवोन्मेष का संचार करायेगी।

अब तक विश्वविद्यालय में जिन ग्रन्थमालाओं के अन्तर्गत ग्रन्थों के प्रकाशन हो रहे हैं, उनका विवरण अधोलिखित है–

१. सरस्वतीभवन-ग्रन्थमाला।
२. सरस्वतीभवन-अध्ययनमाला।
३. गङ्गानाथझा-ग्रन्थमाला।
४. गङ्गानाथझा-प्रवचनमाला।
५. सम्पूर्णानन्द-ग्रन्थमाला।
६. म.म. गोपीनाथकविराज-ग्रन्थमाला।
७. वल्लभवेदान्त-ग्रन्थमाला।
८. योगतन्त्र-ग्रन्थमाला।
९. म.म. शिवकुमारशास्त्रि-ग्रन्थमाला।
१०. लघु-ग्रन्थमाला।
११. प्राकृत-जैनविद्या-ग्रन्थमाला।
१२. परिसंवाद-ग्रन्थमाला।
१३. पुस्तकालय-दुर्लभ-ग्रन्थयोजना-ग्रन्थमाला।
१४. विश्वविद्यालय-रजतजयन्ती-ग्रन्थमाला।
१५. आचार्य-बदरीनाथशुक्लस्मृति-ग्रन्थमाला।
१६. म.म. सुधाकरद्विवेदि-ग्रन्थमाला।
१७. विश्वविद्यालय-द्विशताब्दी-ग्रन्थमाला।
१८. म.म. गोपीनाथकविराजस्मृति-ग्रन्थमाला।
१९. प्राचार्य–ग्रिफिथ-स्मृति-ग्रन्थमाला।
२०. हस्तलिखितविवरण-पञ्जिका-ग्रन्थमाला।
२१. पण्डितश्रीपट्टाभिरामशास्त्रि-स्मृतिग्रन्थमाला
२२. संस्कार-ग्रन्थमाला
२३. आचार्य बटुकनाथशास्त्रिखिस्ते ग्रन्थमाला

इन ग्रन्थमालाओं की प्रकृति एवं प्रवृत्ति से विश्वविद्यालय के प्रकाशन-वैभव का सङ्केत मिलता है। वेदों से लेकर सम्प्रति सृजित हो रहे ग्रन्थरत्नों से उक्त ग्रन्थमालाएँ गुम्फित हैं। निश्चय ही इस सारस्वत-सम्पदा से प्रज्वलित ज्ञानदीप 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के शाश्वत सन्देश का उद्घोष करता हुआ 'श्रुतं मे गोपाय' इस भरतवाक्य की फलश्रुति को चरितार्थ करेगा।

वाराणसी
शरत्पूर्णिमा,
वि.सं. २०६२।

हरिश्चन्द्र मणि त्रिपाठी
निदेशक, प्रकाशन-संस्थान
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय



विषयानुक्रमणिका



१. वेद

१. शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहिता (उत्तरविंशतिः)

स.भ.ग्र.मा. [११४]

इसका प्रकाशन सायणाचार्य के भाष्य के साथ हुआ है। वैदिक साहित्य की श्रीवृद्धि कराने वाले इस ग्रन्थ का सम्पादन पं. श्री चिन्तामणि मिश्र ने किया है।

आकार : क्राउन, पृ.सं. ३८६ — २२.००

२. शुक्लयजुःप्रातिशाख्यम् [ज्योत्स्नावृत्तिः]

स.भ.ग्र.मा. [१२५]

विश्रुत वेदमनीषी प्रो. युगलकिशोर मिश्र जी द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'ज्योत्स्नावृत्ति' के साथ प्रथम बार हुआ है। प्रो. मिश्र की विस्तृत भूमिका के साथ इसमें परिशिष्ट के रूप में निम्नलिखित तीन महत्त्वपूर्ण वैदिक ग्रन्थ समाविष्ट हैं–

१. प्रतिज्ञा-परिशिष्टम् [सभाष्यम्]
२. अष्टविकृतिलक्षणम् [सोदाहरणम्]
३. सम्प्रदायप्रबोधिनी शिक्षा [व्याख्यासहिता]

इस प्रकार यह ग्रन्थ शुक्लयजुर्वेदीय माध्यन्दिन शाखा के व्याकरण एवं पारम्परिक उच्चारण-पद्धति के स्वरूप तथा वैशिष्ट्य को सर्वाङ्गीण रूप से प्रस्तुत करता है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४२२ — ८०.००

३. ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्

स.भ.ग्र.मा. [१२१]

इस प्रातिशाख्य-ग्रन्थ का प्रकाशन उव्वटाचार्य के भाष्य के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३९० — ५६.००

४. अथर्ववेदे राजनीतिः

स.भ.अ.मा. [३८]

यह ग्रन्थ डॉ. रामचन्द्र रटाटे द्वारा लिखा गया है। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ के माध्यम से राजनीति-शास्त्र को एक नयी दिशा प्रदान की है।

आकार : रायल, पृ.सं. १८४ — ५०.००

५. अग्निचयन

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [१०]

इस ग्रन्थ के प्रणेता डॉ. विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी हैं। मनीषी लेखक ने इस ग्रन्थ में 'अग्निचयन' के मिथकीय एवं शास्त्रीय पक्षों को बड़े ही विवेचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४८८ १४०.००

६. प्रतिज्ञापरिशिष्टम्

लघु-ग्र.मा. [४४]

आचार्य कात्यायन द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का सम्पादन सरस्वतीभवन की पाण्डुलिपि के आधार पर हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. २४ ४.५०

७. ईशकेनोपनिषदौ

वि.वि.द्विशताब्दी-ग्र.मा. [८]

इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'पण्डित-परिक्रमा' के सप्तम स्तबक के रूप में पण्डित श्री क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा विरचित आङ्ग्लभाषानुवाद के साथ किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. विजय नारायण मिश्र ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५६ ५०.००

८. चातुर्ज्ञानम्

पु.दु.ग्र.यो.ग्र.मा. [८]

रावणकृत 'बैठपरिभाषा' नामक ग्रन्थ का एक भाग यह ग्रन्थ श्री नन्दि-नाथ मिश्र द्वारा प्रणीत 'वैदिकी' व्याख्या से विभूषित है। शाकलशाखीय ऋग्वेद के कुछ विशिष्ट क्रमों से समन्वित पदों का अङ्कात्मक मान एवं कोटि-निर्धारण इस ग्रन्थ में किया गया है। इसका सम्पादन श्री जनार्दन पाण्डेय ने विषयप्रख्यापिनी भूमिका के साथ किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ९६ ५६.००

९. वाजसनेय-प्रातिशाख्य : एक परिशीलन

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [२०]

इस महनीय ग्रन्थ के प्रणेता विश्रुत वैदिक विद्वान् प्रो. युगलकिशोर मिश्र जी हैं। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में वाजसनेय-प्रातिशाख्य को केन्द्र में रखकर चारों वेदों के प्रातिशाख्यों के विषयों का समीक्षात्मक अनुशीलन

किया है, जो वैदिक व्याकरण का समग्र एवं विस्तृत चिन्तन हिन्दी-भाषा में प्रस्तुत करता है। विस्तृत भूमिका के साथ इसके परिशिष्ट रूप में निम्नलिखित तीन महत्त्वपूर्ण वैदिक-ग्रन्थ भी समाविष्ट हैं–

१. याज्ञवल्क्य-शिक्षा (संस्कृतव्याख्यासहित, सम्पूर्ण)
२. अष्टविकृतिविवरणम् (जटा-माला-शिखा-रेखा-ध्वज-दण्ड-रथ एवं घन विकृतियों के श्लोकबद्ध लक्षण एवं उनकी सोदाहरण संस्कृत व्याख्या के सहित)
३. क्रमसन्धान-स्थलतालिका (माध्यन्दिन-शाखीय क्रमपाठ के साथ सन्धान स्थलों का विवरणात्मक ग्रन्थ)

इस प्रकार इस ग्रन्थरत्न में शुक्लयजुर्वेद-प्रातिशाख्य एवं याज्ञवल्क्य-शिक्षा ग्रन्थ के साथ अष्टविकृतियों का स्वरूप-परिचायन एकत्र उपलब्ध हो जाता है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५४४ २४०.००

१०. वाजसनेयि-संहिता एवं तैत्तिरीय-संहिता का तुलनात्मक अध्ययन

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [२२]

इस ग्रन्थ के प्रणेता पण्डित श्री केशव प्रसाद द्विवेदी जी हैं। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में वाजसनेयि तथा तैत्तिरीय संहिताओं का तुलनात्मक विश्लेषण हिन्दी-भाषा के माध्यम से अत्यन्त उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३८४, भाग-१ ३५०.००
आकार : रायल, पृ.सं. १४४, भाग-२ १५०.००

११. रामतापनीयोपनिषद् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [२४]

इस उपनिषद्-ग्रन्थ का प्रकाशन आनन्दवन की व्याख्या के साथ किया गया है। इसमें भगवान् राम को परब्रह्म कहा गया है और उनकी आराधना के प्रकार वर्णित हैं। अन्त में पूजन तथा धारण के यन्त्र-चित्र भी संलग्न हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २२८ १६०.००

१२. मैत्र्युपनिषद्

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [१८] ISBN : 81-7270-054-7

इस उपनिषद्-ग्रन्थ का प्रकाशन श्री रामतीर्थ द्वारा प्रणीत 'दीपिका' संस्कृत-व्याख्या एवं डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय द्वारा लिखित हिन्दी-व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २४८ १८०.००

१३. लिंग्विस्टिक स्टडी आफ द सेवेन्थ मण्डल आफ द ऋग्वेद

स.भ.अ.मा. [६०] ISBN : 81-7270-074-1

डॉ. शारदा चतुर्वेदी द्वारा अंग्रेजी-भाषा में प्रणीत इस ग्रन्थ में ऋग्वेद के सप्तम मण्डल का भाषावैज्ञानिक एवं अनुसन्धानात्मक अध्ययन विस्तारपूर्वक निरूपित किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७२८ १०००.००

१४. अश्वमेध महायज्ञ : एक सांस्कृतिक विश्लेषण

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [३७] ISBN : 81-7270-073-3

डॉ. मिताली देव द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में अश्वमेध यज्ञ का सुविस्तृत विवेचन किया गया है। अश्वमेध यज्ञ की वैदिक विधि, अन्य यज्ञों की अपेक्षा अश्वमेध का वैशिष्ट्य प्रभृति विविध शास्त्रीय पक्षों के निरूपण के साथ ही साथ इस ग्रन्थ में वर्तमान युग में अश्वमेध यज्ञ की उपयोगिता का विशद विवेचन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५९४ ५५०.००

१५. माध्यन्दिन-शतपथब्राह्मणम्

गङ्गानाथझा ग्रन्थमाला [२३] ISBN : 81-7270-130-0 (Set)

इस अपूर्व वैदिक ग्रन्थ का प्रकाशन सायणाचार्य-कृत **'वेदार्थप्रकाश'** संस्कृत-भाष्य एवं हिन्दी-भाषानुवाद के साथ किया गया है। इसका सम्पादन प्रो. युगल किशोर मिश्र ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ९०४, भाग-१ ISBN : 81-7270-134-9 ८००.००

आकार : रायल, पृ.सं. ...., भाग-२ (शीघ्र प्रकाश्य)

१६. कौशिकगृह्यसूत्रस्यालोचनात्मकमनुशीलनम्

डॉ. श्रीकिशोर मिश्र द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में कौशिक-गृह्यसूत्र का आलोचनात्मक एवं अनुसन्धानात्मक विवेचन विस्तारपूर्वक किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. (शीघ्र प्रकाश्य)

१७. वैदिकशिक्षास्वरूपविमर्शः

स.भ.अ.मा. [५७] ISBN : 81-7270-112-8

डॉ. राममूर्ति चतुर्वेदी द्वारा प्रणीत इस महनीय ग्रन्थ में वैदिक शिक्षा के स्वरूप का अनुसन्धानात्मक विवेचन विस्तारपूर्वक किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३५२ ३६०.००

१८. कुण्डरत्नावली

स.भ.ग्र.मा. [१४९] ISBN : 81-7270-125-X

श्रीरामचन्द्रदीक्षित द्वारा प्रणीत मञ्जूषा नामक स्वोपज्ञ टीका के साथ इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है। इसकी सम्पादिका डॉ. मिताली देव हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २२० २२०.००



२. व्याकरण-शास्त्र

१. वाक्यपदीयम्

स.भ.ग्र.मा. [९१]

ISBN : 81-7270-020-2 Set

आचार्य भर्तृहरि द्वारा प्रणीत यह ग्रन्थ हरिवृषभ की 'प्रकाश' तथा 'पद्मश्री' पण्डित श्री रघुनाथ शर्मा की 'अम्बाकर्त्री' व्याख्या के साथ प्रकाशित किया गया है।

ब्रह्मकाण्ड (द्वितीय संस्करण)

आकार : रायल, पृ.सं. २८८ (शीघ्र प्रकाश्य)

वाक्यकाण्ड (द्वितीय संस्करण)

आकार : रायल, पृ.सं. ५३८ (शीघ्र प्रकाश्य)

पदकाण्ड-भाग—१

आकार : रायल, पृ.सं. ३८८ १००.००

पदकाण्ड-भाग—२

आकार : रायल, पृ.सं. ८३२ २३०.००

पदकाण्ड-भाग—३

आकार : रायल, पृ.सं. ६८२ ISBN : 81-7270-021-0 २००.००

२. वाक्यपदीयपाठभेदनिर्णयः

स.भ.ग्र.मा. [११६]

इस ग्रन्थ के प्रणेता 'पद्मश्री' पण्डित श्री रघुनाथ शर्मा ने वाक्यपदीय की समस्त पाण्डुलिपियों तथा देश-विदेश में मुद्रित वाक्यपदीय के समस्त संस्करणों के पाठों का विवेचन करते हुए इस ग्रन्थ का निर्माण किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २०४ भाग—१ २६.००

आकार : रायल, पृ.सं. २८० भाग—२ ८६.००

आकार : रायल, पृ.सं. ६८० भाग—३ १९०.००

३. व्याकरणदर्शनभूमिका

स.भ.अ.मा. [११]

इस ग्रन्थ के प्रणेता स्व. आचार्य रामाज्ञा पाण्डेय ने व्याकरण-दर्शन की भूमिका के रूप में इसका प्रणयन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १३० — २८.००

४. व्याकरणदर्शनपीठिका

स.भ.अ.मा. [१२]

यह ग्रन्थ भी स्व. आचार्य रामाज्ञा पाण्डेय द्वारा प्रणीत है। इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने सकल शास्त्रों का मन्थन करके व्याकरण-दर्शन की पृष्ठभूमि निर्मित की है।

आकार : रायल, पृ.सं. २२४ — ४०.००

५. प्रक्रियाकौमुदी (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [११२] ISBN : 81-7270-013-X Set

श्री रामचन्द्राचार्य द्वारा प्रणीत यह ग्रन्थ श्री कृष्णाचार्य की 'प्रकाश' व्याख्या के साथ तीन भागों में प्रकाशित है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४९० भाग– १ ISBN : 81-7270-012-1 — २५०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ४३६ भाग– २ ISBN : 81-7270-014-8 — २००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ६३८ भाग– ३ ISBN : 81-7270-015-6 — ३००.००

६. महाभाष्यनिगूढाकूतयः

स.भ.अ.मा. [२२]

यह ग्रन्थ विश्रुत विद्वान् डॉ. देवस्वरूप मिश्र द्वारा विरचित है। विद्वान् लेखक ने महाभाष्य की गूढ़तम ग्रन्थियों का गम्भीर विश्लेषण करते हुए यह ग्रन्थ लिखा है।

आकार : रायल, पृ.सं. १८८ — २६.८०

७. वैयाकरणानामन्येषाञ्च मतेन शब्दस्वरूपतच्छक्तिविचारः

स.भ.अ.मा. [२५]

यह ग्रन्थ व्याकरण-शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् डॉ. कालिकाप्रसाद शुक्ल द्वारा प्रणीत है। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में शब्दों के स्वरूप तथा उनकी शक्तियों पर दार्शनिक दृष्टि से प्रकाश डाला है।

आकार : रायल, पृ.सं. १५२ — २६.५०

८. वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा

म.म.शि.कु.शा.ग्र.मा. [३]

नागेशभट्ट की इस विख्यात कृति का सम्पादन सरस्वतीभवन की पाण्डुलिपियों के आधार पर हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३०४ ३६.००

९. धात्वर्थविज्ञानम्

स.भ.अ.मा. [२८]

यह ग्रन्थ डॉ. भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी द्वारा निर्मित है। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में आचार्य पाणिनि तथा अन्य वैयाकरणों के धातुपाठों का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २९० ३१.००

१०. श्लोकसिद्धान्तकौमुदी

स.भ.ग्र.मा. [११७]

यह ग्रन्थ पण्डित श्री सुरेश झा द्वारा लिखा गया है। सम्पूर्ण सिद्धान्तकौमुदी को कवि-लेखक ने श्लोकबद्ध किया है, जिसे दो भागों में प्रकाशित किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ६३४, भाग—१ ३१.००

आकार : डिमाई, पृ.सं. ६३४, भाग—२ ५८.००

११. निपातार्थनिर्णयः

स.भ.अ.मा. [३०]

यह ग्रन्थ डॉ. हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी द्वारा प्रणीत है। इस ग्रन्थ में डॉ. त्रिपाठी ने वैदिक तथा लौकिक संस्कृत-वाङ्मय में प्रयुक्त तथा व्याख्यात निपातों, उपसर्गों एवं अव्ययों का व्याकरणिक, भाषावैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक विवेचन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३६० ६०.००

१२. पाणिनीयधातुपाठसमीक्षा

स.भ.अ.मा. [१४]

यह ग्रन्थ डॉ. भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी द्वारा विरचित है। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में व्याकरण-शास्त्र के सभी साम्प्रदायिक ग्रन्थों के धातुपाठों का मौलिक अनुसन्धान प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६०८ भाग—१ ८५.००

आकार : रायल, पृ.सं. ४४८ भाग—२ १३०.००

१३. वाक्यवादः

लघु-ग्र.मा. [४३]

आचार्य अचलोपाध्याय द्वारा विरचित इस ग्रन्थ में वाक्य की शक्तियों का विवेचन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७० ४.५०

१४. परिभाषेन्दुशेखरः

स.भ.अ.मा. [३६]

आचार्य नागेशभट्ट द्वारा रचित इस ग्रन्थ को श्री शेषशर्मा सूरि द्वारा प्रणीत 'सर्वमङ्गला' व्याख्या के साथ प्रकाशित किया गया है। इस ग्रन्थ के सम्पादक डॉ. गिरिजेश कुमार दीक्षित ने सरस्वतीभवन में उपलब्ध सर्वमङ्गला की समस्त पाण्डुलिपियों के तुलनात्मक, आनुसन्धानिक विमर्शों द्वारा इसे समृद्ध किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५२८ ८०.००

१५. परिभाषेन्दुशेखरः (द्वितीय संस्करण)

म.म.शिवकुमारशास्त्रि-ग्र.मा. [१]

आचार्य नागेशभट्ट द्वारा रचित इस ग्रन्थ को पण्डित श्री यागेश्वर शास्त्री द्वारा प्रणीत 'हैमवती' व्याख्या के सा।थ प्रकाशित किया गया है। इस ग्रन्थ के सम्पादक पण्डित श्री कालिका प्रसाद शुक्ल हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ४०० १००.००

१६. व्याकरणे नागेशभट्टकृतिषु तन्त्रस्य प्रभावः

स.भ.अ.मा. [३७]

इस ग्रन्थ के प्रणेता डॉ. राजनाथ त्रिपाठी ने नागेशभट्ट के व्याकरण-शास्त्र के ग्रन्थों पर पड़े तान्त्रिक-प्रभावों का विशद विश्लेषण किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २५६ ५२.००

१७. भूषणसार-परमलघुमञ्जूषयोः सिद्धान्तानां समीक्षा

स.भ.अ.मा. [३२]

यह ग्रन्थ डॉ. राममनोहर मिश्र द्वारा प्रणीत है। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में वैयाकरणभूषणसार तथा लघुमञ्जूषा के व्याकरणशास्त्रीय दार्शनिक सिद्धान्तों का गम्भीर विवेचन प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २४४ ३५.००

१८. वैयाकरणभूषणसारः

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [११]

आचार्य कौण्डभट्ट द्वारा निर्मित इस ग्रन्थ को व्याकरण-शास्त्र के विश्रुत विद्वान् डॉ. आद्याप्रसाद मिश्र की 'हिन्दी-व्याख्या' के साथ प्रकाशित किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४०८ — ७०.००

१९. सभ्याभरणम्

स.भ.ग्र.मा. [१२४]

यह ग्रन्थ आचार्य रामचन्द्र भट्ट द्वारा प्रणीत है। इस ग्रन्थ की विलक्षणता यह है कि व्याकरण-शास्त्र के साथ ही साथ इसमें अन्य शास्त्रों के सिद्धान्तों का वर्णन, विश्लेषण कथोपकथन के माध्यम से दर्शाया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १९२ — ३६.००

२०. शिक्षासङ्ग्रहः

म.म.गो.क.ग्र.मा. [३]

महर्षि याज्ञवल्क्य एवं पाणिनि आदि ३२ आचार्यों की शिक्षाओं के संग्रह के रूप में इस ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है। व्याकरण-शास्त्र के स्वतः प्रमाणभूत आचार्य श्री रामप्रसाद त्रिपाठी ने इसका सम्पादन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४४० — १००.००

२१. वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [१२]

आचार्य नागेशभट्ट के द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन आचार्य श्री बालम्भट्ट की 'कला', आचार्य श्री दुर्बलाचार्य की 'कुञ्जिका' एवं व्याकरण-शास्त्र के मनीषी विद्वान् आचार्य श्री रामप्रसाद त्रिपाठी की विमर्शपूर्ण 'हिन्दी-व्याख्या' के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८१६ भाग—१ — २००.००
आकार : रायल, पृ.सं. २६४ भाग—२ — १५०.००

२२. सिद्धान्तचिन्तामणिः

सम्पू.ग्र.मा. [१५]

इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक आचार्य श्री रामप्रसाद त्रिपाठी ने महामुनि पाणिनि के नियम एवं अपवाद सूत्रों का तलस्पर्शी विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २०० — ६४.००

२३. ऋग्वेदीय सुबन्त-पदों का व्युत्पत्ति-चिन्तन

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [११]

इस ग्रन्थ के विद्वान् लेखक डॉ. बनारसी त्रिपाठी ने ऋग्वेद में आये हुए सुबन्त-पदों का व्याकरणिक, भाषावैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४१६ — १३०.००

२४. नामरूपोसमासो

पालि-ग्र.मा. [५]

यह ग्रन्थ भदन्त खेमाचरिय थेर द्वारा प्रणीत है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३२ — ४.००

२५. कच्चायनव्याकरणम्

पु.दु.ग्र.यो.ग्र.मा. [७]

श्री कच्चायन महाथेर द्वारा विरचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन महाविजितावी थेर द्वारा रचित 'कच्चायनवण्णना' व्याख्या के साथ किया गया है। इसका सम्पादन सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर विशिष्ट टिप्पणियों के साथ प्रो. लक्ष्मीनारायण तिवारी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४१६ — ८०.००

२६. समासवृत्तिविमर्शः

स.भ.अ.मा. [४२]

यह ग्रन्थ डॉ. विजयप्रसाद त्रिपाठी द्वारा प्रणीत है। इस ग्रन्थ में डॉ. त्रिपाठी ने वृत्ति का स्वरूप, समासों का सामर्थ्य, भेद एवं विधियों आदि का विभिन्न आचार्यों के मतानुसार मौलिक अनुसन्धान प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २८४ — ९०.००

२७. शब्दार्थमीमांसा

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [१४]

यह ग्रन्थ डॉ. गौरीनाथ शास्त्री द्वारा प्रणीत है। इस ग्रन्थ में शास्त्री जी ने शब्द, अर्थ एवं वाक्य की शक्तियों का तलस्पर्शी विश्लेषण किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २९६ — १००.००

२८. व्याकरणशास्त्रे लौकिकन्यायानामुपयोगः

स.भ.अ.मा. [४४]

यह ग्रन्थ डॉ. रामकिशोर शुक्ल द्वारा प्रणीत है। इस ग्रन्थ में डॉ. शुक्ल ने लौकिक न्यायों का सङ्कलन करते हुए उनके शास्त्रीय प्रयोगों का मौलिक अनुसन्धान प्रस्तुत किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १९२ — ८०.००

२९. बृहच्छब्देन्दुशेखरः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [८७]

व्याकरण-शास्त्र का यह मूर्द्धन्य ग्रन्थ आचार्य श्री नागेशभट्ट द्वारा प्रणीत है। इसका सम्पादन डॉ. श्री सीताराम शास्त्री ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ८८० भाग—१ — २००.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ८०० भाग—२ — ३८०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ८४८ भाग—३ — ४००.००

३०. पाणिनीयप्रबोधः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [१०१]

व्याकरणशास्त्र के इस प्रारम्भिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रणेता श्री गोपालशास्त्री दर्शनकेसरी जी हैं। इस ग्रन्थ का प्रकाशन अनुसन्धानात्मक परिशिष्टों तथा विमर्शात्मक भूमिका के साथ किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३२० — १००.००

३१. पाणिनीयव्याकरणे प्रमाणसमीक्षा (द्वितीय संस्करण)

स.भ.अ.मा. [२०]

व्याकरणशास्त्र के अभिनव पाणिनि आचार्य श्री रामप्रसाद त्रिपाठी जी द्वारा प्रणीत इस महनीय ग्रन्थ में प्रमाणसामान्य, प्रत्यक्ष-प्रमाण, वाक्य की स्फोटरूपता, शक्ति-सम्बन्ध का लक्षण, शक्ति-भेद तथा बौद्धपदार्थवादियों के अनुसार पक्ष, पक्षता, व्याप्ति, परामर्श आदि के लक्षण प्रभृति विषयों का गम्भीर विश्लेषण किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५०४ — ४००.००

३२. दशपाद्युणादिवृत्तिः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [८१]

यह ग्रन्थ उणादि शब्दों का संकलन है। विस्तृत 'वृत्ति' द्वारा इस ग्रन्थ की सुबोधता बढ़ी है। इसके सम्पादक महामहोपाध्याय युधिष्ठिर मीमांसक जी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २८८ — २३२.००

३३. कातन्त्रव्याकरणम्

स.भ.ग्र.मा. [१३५] ISBN : 81-7270-006-7 Set

आचार्य शर्ववर्मा द्वारा प्रणीत व्याकरणशास्त्र के इस ग्रन्थ का प्रकाशन चार टीकाओं के साथ हुआ है। उत्कृष्ट भूमिका तथा अनुसन्धानात्मक परिशिष्टों के साथ इस ग्रन्थ का सम्पादन डॉ. जानकी प्रसाद द्विवेदी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४५६ भाग-१ ३५०.००

आकार : रायल, पृ.सं. ६२४ भाग-२ खण्ड-१ ५००.००

आकार : रायल, पृ.सं. ८०० भाग-२ खण्ड-२ ISBN : 81-7270-005-9 ६००.००

आकार : रायल, पृ.सं. ५६० भाग-३ खण्ड-१ ISBN : 81-7270-052-0 ४८०.००

आकार : रायल, पृ.सं. ६५२ भाग-३ खण्ड-२ ISBN : 81-7270-102-0 ६००.००

आकार : रायल, पृ.सं. ८२४ भाग-४ ISBN : 81-7270-160-8 ८००.००

३४. शब्दशास्त्रीयवृत्तिविमर्शः

आ.बदरीनाथशुक्लस्मृति-ग्र.मा. [५]

इस ग्रन्थ के प्रणेता व्याकरणशास्त्र के मूर्द्धन्य विद्वान् आचार्य श्री रामप्रसाद त्रिपाठी जी हैं। मनीषी लेखक ने इस ग्रन्थ में शब्द-शास्त्र के अनुसार शक्ति, लक्षणा एवं व्यञ्जना का विशद तथा अनुसन्धानात्मक विवेचन किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ८० ७५.००

३५. कतिपयपाणिनिसूत्राणां विशेषव्याख्यानम्

स.भ.ग्र.मा. [१३५]

डॉ. के.वि. सोमयाजुलु द्वारा प्रणीत इस लघु-ग्रन्थ में पाणिनीय व्याकरण के कतिपय सूत्रों का विशद विश्लेषण किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५२ १०.००

३६. लघुशब्देन्दुशेखर (कारकप्रकरणम्)

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [२१] ISBN : 81-7270-075-X

व्याकरणशास्त्र के इस महनीय ग्रन्थ का प्रकाशन पं. श्री भैरव मिश्र की 'भैरवी' संस्कृत-व्याख्या तथा डॉ. तेजपाल शर्मा की संस्कृतनिष्ठ हिन्दी-व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४४८ ४००.००

३७. सद्दबिन्दु:

पालि-ग्र.मा. [१०]

सिरि धम्मराजा क्यच्चा द्वारा प्रणीत पालि-व्याकरण के इस लघु-ग्रन्थ का प्रकाशन भदन्त सिरि सद्धम्मकित्ति महाफुस्सदेव थेर की 'अभिनव' टीका के साथ किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३२ १०.००

३८. संस्कृतव्याकरण की प्राविधिक शब्दावली का विवेचन

वि.वि.र.ग्र. [४२] ISBN : 81-7270-145-4

डॉ. व्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन' द्वारा लिखित इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है। इसके नौ परिवर्तों में संस्कृत व्याकरण के प्राविधिक शब्दों की व्याख्या अत्यन्त सारगर्भित शैली में की गयी है। इसके सम्पादक भी डॉ. व्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन' ही हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ७४४ ७५०.००



३. ज्यौतिष-शास्त्र

१. उकरा

स.भ.ग्र.मा. [१०४]

इस ग्रन्थ के लेखक सावयूसजूस हैं। लेखक ने अरबिक-भाषा से इसका अनुवाद संस्कृत-भाषा में किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५६ २९.००

२. ग्रहनक्षत्राणि

सम्पू.ग्र.मा. [११]

मूलरूप से यह ग्रन्थ हिन्दी-भाषा में प्रकाशित हुआ था। इसके लेखक विश्रुत मनीषी स्व. डॉ. सम्पूर्णानन्द जी हैं। इसका संस्कृत-अनुवाद श्री कमलापति मिश्र द्वारा हुआ है। इस ग्रन्थ में ग्रहों एवं नक्षत्रों की गति तथा जीवजगत् पर उनके प्रभाव का गम्भीर अनुशीलन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८२ २३.००

३. वास्तवचन्द्रशृङ्गोन्नतिः (द्वितीय संस्करण)

लघु-ग्र.मा. [३६]

इस ग्रन्थ के रचयिता म.म. सुधाकर द्विवेदी हैं। इसका सम्पादन प्रो. कृष्णचन्द्र द्विवेदी जी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८४ ३०.००

४. सिद्धान्तशिरोमणिः (द्वितीय संस्करण)

पुस्त.दु.ग्र.यो.ग्र.मा. [५]

यह पुस्तक श्री भास्कराचार्य द्वारा प्रणीत है। इसका प्रकाशन 'स्वोपज्ञ-वासनाभाष्य' एवं श्री नृसिंह दैवज्ञ के वार्तिकों के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६०८ २००.००

५. सूर्यसिद्धान्तः

म.म.सुधा.द्वि.ग्र.मा. [१]

यह ज्यौतिष-शास्त्र का मूर्धन्य ग्रन्थ माना जाता है। इसका प्रकाशन म.म. सुधाकर द्विवेदी द्वारा विरचित 'सुधावर्षिणी' टीका के साथ हुआ है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३२० ४६.००

६. ज्यौतिषशास्त्रे दिग्देशकालज्ञानम्

स.भ.अ.मा. [४१]

इस ग्रन्थ के लेखक डॉ. नागेन्द्र पाण्डेय हैं। इसमें दिक्, देश तथा काल का विवेचन ज्यौतिष-शास्त्र के अनुसार हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३२८ — ११०.००

७. सिद्धान्ततत्त्वविवेकः

म.म.सुधा.द्वि.ग्र.मा. [३]

श्री कमलाकर भट्ट द्वारा विरचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री गङ्गाधर शर्मा कृत 'वासना' भाष्य के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५६० भाग—१ — १८०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ३८४ भाग—२ — २००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ३३६ भाग—३ — १४०.००

८. म.म. सुधाकर द्विवेदी वेधशाला-परिचय

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [१८]

यह ग्रन्थ पण्डित श्री कल्याणदत्त शर्मा द्वारा प्रणीत है। इस ग्रन्थ में विश्वविद्यालय में नवनिर्मित वेधशाला के समस्त यन्त्रों का विशद विवेचन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ६४ — १६.००

९. वास्तुसौख्यम् (द्वितीय संस्करण)

म.म.सुधा.द्वि.ग्र.मा. [४]

ISBN : 81-7270-011-3

श्री टोडरमल्ल द्वारा प्रणीत ज्यौतिष-शास्त्र के इस अपूर्व ग्रन्थ का प्रकाशन आचार्य श्री कमलाकान्त शुक्ल द्वारा प्रणीत 'हिन्दी-व्याख्या' के साथ किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २०० — ६०.००

१०. सङ्ग्रहशिरोमणिः

म.म.सुधा.द्वि.ग्र.मा. [५]

ज्यौतिषशास्त्र के इस अपूर्व ग्रन्थ का प्रकाशन आचार्य श्री कमला-कान्त शुक्ल की 'हिन्दी-व्याख्या' के साथ किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ७६८ भाग-१ — २५०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ४९६ भाग-२ — १८०.००

११. प्राच्यभारतीयम् ऋतुविज्ञानम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.अ.मा. [१९] ISBN : 81-7270-036-9

इस ग्रन्थ के प्रणेता डॉ. धुनीराम त्रिपाठी हैं। डॉ. त्रिपाठी ने इस ग्रन्थ में ज्यौतिष-शास्त्र तथा संस्कृतभाषा के अनेक ग्रन्थों में उद्धृत ऋतुविज्ञान सम्बन्धी वचनों का तथा लोकभाषा में प्रसिद्ध घाघ एवं भड्डुरि की लोकोक्तियों का आधुनिक विज्ञान के साथ तुलनात्मक विवेचन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २७२ १३०.००

१२. बृहत्संहिता (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [९७]

वराहमिहिराचार्य द्वारा प्रणीत ज्यौतिष-शास्त्र के इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ का प्रकाशन भट्टोत्पल की विवृति के साथ किया गया है। विशिष्ट भूमिका एवं परिशिष्ट के साथ इसका सम्पादन विद्यावारिधि आचार्य श्री कृष्णचन्द्र द्विवेदी जी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६३२ भाग—१ २००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ७५२ भाग—२ २५०.००

१३. सूर्यग्रहणम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.अ.मा. [१५]

इस ग्रन्थ के लेखक एवं सम्पादक आचार्य श्री कृष्णचन्द्र द्विवेदी हैं। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ की रचना की पृष्ठभूमि में सूर्यग्रहण से सम्बन्धित पौरस्त्य एवं पाश्चात्त्य सिद्धान्तों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २४० १५०.००

१४. चलराशिकलनम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [८०]

गणितशास्त्र के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रणेता पण्डित श्री सुधाकर द्विवेदी जी हैं। मनीषी लेखक ने आधुनिक और प्राचीन गणित के तुलनात्मक विवेचन के साथ हिन्दी-भाषा में इस ग्रन्थ की रचना की है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४३६ १५०.००

१५. अर्वाचीनं ज्योतिर्विज्ञानम् (द्वितीय संस्करण)

सम्पू.ग्र.मा. [४]

श्री रामनाथ सहाय द्वारा प्रणीत इस महनीय ग्रन्थ में पाश्चात्त्य

ज्योतिर्विज्ञान का गम्भीर विवेचन किया गया है। ग्रन्थ के अन्त में पाश्चात्त्य ज्योतिर्विदों के नाम तथा ग्रहों की सूची भी संलग्न है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३४४ १२४.००

१६. राशियाँ बोलती हैं

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [२७]

फलित ज्योतिष के इस महनीय ग्रन्थ के प्रणेता श्री सेतुबन्ध रामेश्वर मिश्र हैं। लेखक ने हिन्दी-भाषा के माध्यम से ज्योतिषशास्त्र के गूढ़तम रहस्यों को सर्वजनग्राह्य बनाते हुए ग्रन्थ का प्रणयन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २३२ भाग—१ २२४.००

आकार : रायल, पृ.सं. २९६ भाग—२ २५०.००

१७. सूर्यग्रहण-गणित

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [२९]

पण्डित श्री कल्याणदत्त शर्मा द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में सूर्यग्रहण का विविध सैद्धान्तिक दृष्टियों से विशद विवेचन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ११६ १३२.००

१८. सरलत्रिकोणमितिः (द्वितीय संस्करण)

सम्पू.ग्र.मा. [१०] ISBN : 81-7270-078-2

म.म. बापूदेव शास्त्री द्वारा प्रणीत तथा पं. श्री गोविन्द पाठक द्वारा सम्पादित ज्यौतिषशास्त्र के इस ग्रन्थ में रेखागणित के दुरूह सिद्धान्तों का अत्यन्त सरल पद्धति से निरूपण किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २०८ १२०.००

१९. सर्वानन्दकरणम्

म.म.सु.द्वि.ग्र.मा. [७] ISBN : 81-7270-000-8

ज्यौतिषशास्त्र के इस महनीय ग्रन्थ के प्रणेता पं. श्री गोविन्द आप्टे जी हैं। इसका प्रकाशन स्वोपज्ञ व्याख्या के साथ किया गया है। इस ग्रन्थ में सप्ततारा, त्रिप्रश्न, ग्रहण, महापात, भुजज्या, स्पर्शज्या, गोलीय क्षेत्र आदि विषयों का विशद निरूपण किया गया है। इसका सम्पादन प्रो. कृष्णचन्द्र द्विवेदी ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३०० १२०.००

२०. बृहत्संहिता (परिवर्द्धित संस्करण)

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [२०] ISBN : 81-7270-076-8 (Set)

वराहमिहिराचार्य द्वारा प्रणीत ज्योतिषशास्त्र के इस महनीय ग्रन्थ का प्रकाशन भट्टोत्पल की 'विवृति' एवं डॉ. नागेन्द्र पाण्डेय की सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५६०, भाग-१ ISBN : 81-7270-077-6 ५००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ६४०, भाग-२ ISBN : 81-7270-144-6 ६००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ...., भाग-३ (शीघ्र प्रकाश्य)

२१. जैमिनिसूत्रम्

म.म.सु.द्वि.ग्र.मा. [९] ISBN : 81-7270-146-2

ज्योतिषशास्त्र के इस महनीय ग्रन्थ का प्रकाशन आचार्य श्री कमलाकान्त शुक्ल की हिन्दी-व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३५२ ३५०.००

२२. लघुपाराशरी एवं मध्यपाराशरी

म.म.सुधा.द्वि.ग्र.मा. [८] ISBN : 81-7270-100-4

फलित ज्योतिष के इस अपूर्व ग्रन्थ का प्रकाशन आचार्य श्री कमलाकान्त शुक्ल की संस्कृत तथा हिन्दी-व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १२८ १२०.००

२३. वास्तुसारसङ्ग्रहः

म.म.सु.द्वि.ग्र.मा. [६] ISBN : 81-7270-096-2

फलित ज्योतिष के इस अपूर्व ग्रन्थ का प्रकाशन आचार्य श्री कमलाकान्त शुक्ल की हिन्दी-व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ४१० २८०.००



४. न्याय-वैशेषिक-दर्शन

१. तत्त्वचिन्तामणौ विधिवादः

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [१०]

इस ग्रन्थ का प्रकाशन विश्रुत नैयायिक आचार्य श्री बदरीनाथ शुक्ल द्वारा निर्मित 'मूर्तिमती' नामक हिन्दी-व्याख्या के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३७६ ६८.००

२. तत्त्वचिन्तामणिः (प्रत्यक्षखण्डे प्रथमो भागः)

म.म.शिव.शा.ग्र.मा. [९]

इस ग्रन्थ का प्रकाशन म.म. पक्षधर मिश्र की 'आलोक', म.म. महेश ठाकुर की 'दर्पण' एवं श्री मथुरानाथ 'तर्कवागीश' की 'माथुरी' टीकाओं के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४९६ १३२.००

३. व्योमवती

म.म.शि.शा.ग्र.मा. [६]

यह ग्रन्थ श्री व्योमशिवाचार्य द्वारा प्रणीत है। इसका सम्पादन सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. २९६ भाग—१ २७.००

आकार : रायल, पृ.सं. ३१४ भाग—२ ५०.००

४. किरणावली

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [८]

श्री उदयनाचार्य द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'हिन्दी-व्याख्या' के साथ हुआ है। पाण्डित्यपूर्ण हिन्दी-व्याख्या के लेखक डॉ. गौरीनाथ शास्त्री हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ४०२ ४१.००

५. किरणावलीरहस्यम्

म.म.शिव.शा.ग्र.मा. [४]

इस ग्रन्थ के रचयिता म.म. मथुरानाथ 'तर्कवागीश' हैं। इसका सम्पादन सरस्वतीभवन की पाण्डुलिपियों के आधार पर डॉ. गौरीनाथ शास्त्री ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १६८ २४.००

६. न्यायमञ्जरी

म.म.शि.शा.ग्र.मा. [५]

श्री जयन्तभट्ट द्वारा प्रणीत यह ग्रन्थ श्री चक्रधर द्वारा विरचित 'ग्रन्थिभङ्ग' व्याख्या के साथ प्रकाशित है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४९२ भाग-१ ६४.००

आकार : रायल, पृ.सं. ३६४ भाग-२ ५०.००

आकार : रायल, पृ.सं. २५६ भाग-३ ३८.००

७. प्रशस्तपादभाष्यम् (द्वितीय संस्करण)

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [१]

प्रशस्तपादाचार्य द्वारा प्रणीत यह ग्रन्थ श्रीधरभट्ट द्वारा विरचित 'न्यायकन्दली' एवं स्व. श्री दुर्गाधर झा द्वारा लिखित 'हिन्दी-व्याख्या' के साथ प्रकाशित हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८५६ ४८०.००

८. प्रगल्भी

म.म.शि.शा.ग्र.मा. [७]

प्रगल्भाचार्य द्वारा विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' के उपमान खण्ड की यह 'प्रगल्भी' टीका प्रथम बार सरस्वतीभवन की पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित करके प्रकाशित की गई है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५० १५.००

९. दीधितिकारोपज्ञविचाराणामालोचनम्

स.भ.अ.मा. [३६]

इस ग्रन्थ के प्रणेता प्रसिद्ध नैयायिक डॉ. श्रीराम पाण्डेय ने 'दीधिति' टीका के विचारों का पद्यबद्ध साङ्गोपाङ्ग विवेचन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४६० ५०.००

१०. कालसिद्धान्तदर्शिनी

स.भ.ग्र.मा. [१२०]

म.म. हाराणचन्द्र भट्टाचार्य द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में काल-विषयक सिद्धान्तों का सकल-शास्त्र-समर्थित विवेचन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १३६ २५.००

११. न च रत्नमालिका (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [९३] ISBN : 81-7270-106-3

न्यायादर्शन के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रणेता श्रीशास्तृ शर्मा हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २१८ १४०.००

१२. दि हिस्ट्री एण्ड बिब्लियोग्राफी आफ न्याय-वैशेषिक लिटरेचर

स.भ.अ.मा. [२]

यह ग्रन्थ अंग्रेजी-भाषा में प्रकाशित है। इसके लेखक म.म. गोपीनाथ कविराज जी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २१६ ३०.००

१३. वैशेषिकसिद्धान्तानां गणितीयपद्धत्या विमर्शः

स.भ.अ.मा. [२६]

इस ग्रन्थ के प्रणेता तथा सम्पादक डॉ. नारायण गोपाल डोंगरे हैं। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में वैशेषिक-दर्शन के सिद्धान्तों का अनुसन्धानात्मक विवेचन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १२२ २४.६०

१४. पदवाक्यरत्नाकरः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [८८]

पण्डित श्री गोकुलनाथ उपाध्याय द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री यदुनाथ मिश्र द्वारा विरचित 'गूढ़ार्थदीपिका' व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७६० २८०.००

१५. अनुमितिपरामर्शकार्यकारणभावविचारः

लघु-ग्र.मा. [५२]

आचार्य महादेव पुण्यस्तम्भकर द्वारा प्रणीत न्यायशास्त्र के इस अद्भुत ग्रन्थ का सम्पादन अनुसन्धानात्मक परिशिष्टों तथा टिप्पणियों के साथ डॉ. राजाराम शुक्ल ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८२ १०.००

१६. पक्षतावादः

लघु-ग्र.मा. [५३]

न्यायशास्त्र के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रणेता श्री रघुदेव न्यायालङ्कार भट्टाचार्य जी हैं। इस ग्रन्थ का सम्पादन सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर डॉ. राजाराम शुक्ल ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४० — १०.००

१७. रससारः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [५]

यह ग्रन्थ भट्ट वादीन्द्र द्वारा निर्मित है। इसका अपर नाम 'गुणकिरणावली टीका' है। इस ग्रन्थ में न्याय-दर्शन के गुण-परिच्छेद का बहुत गम्भीर विवेचन हुआ है। इसके सम्पादक महामहोपाध्याय डॉ. गङ्गानाथ झा हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ११२ — ८०.००

१८. नव्यमतीयपरामर्शकारणतावादः

लघु-ग्र.मा. [५५]

न्यायशास्त्र के इस ग्रन्थ का प्रणयन आचार्य श्री महादेव पुण्यस्तम्भकर ने किया है। इस ग्रन्थ का सम्पादन सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर डॉ. राजाराम शुक्ल ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५४ — १०.००

१९. तर्कचन्द्रिका

लघु-ग्र.मा. [५८] ISBN : 81-7270-044-X

पं. श्री हरिराम द्वारा प्रणीत न्यायदर्शन के इस प्रकरण-ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन पुस्तकालय की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. हरेराम त्रिपाठी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३२ — १०.००

२०. आकांक्षावादः

लघु-ग्र.मा. [६१] ISBN : 81-7270-072-5

आचार्य श्री रघुदेव भट्टाचार्य द्वारा प्रणीत न्यायशास्त्र के इस लघु-ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन पुस्तकालय की हस्तलिखित

पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। इसका सम्पादन डॉ हरेराम त्रिपाठी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४४ १६.००

२१. ईश्वरवादः

लघु-ग्र.मा. [६५] ISBN : 81-7270-115-2

श्री रघुदेव भट्टाचार्य द्वारा विरचित न्याय के इस प्रकरण ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन पुस्तकालय की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. हरेराम त्रिपाठी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ३२ १२.००

२२. भेदरत्नम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [४९] ISBN : 81-7270-120-9

महामहोपाध्याय श्री शङ्कर मिश्र द्वारा न्यायशास्त्र के इस प्रकरण ग्रन्थ का प्रणयन किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. राजाराम शुक्ल हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ४० १६.००



९. वेदान्त-दर्शन

१. अद्वैतदीपिका

स.भ.ग्र.मा. [११८]

इस ग्रन्थ के रचयिता श्री नृसिंहाश्रम हैं। इसका प्रकाशन श्री नारायणाश्रम द्वारा विरचित 'विवरण' टीका के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. २९२ भाग-१ ३८.००
आकार : रायल, पृ.सं. ४८८ भाग-२ ६५.००
आकार : रायल, पृ.सं. १०४ भाग-३ २०.००

२. विराड्विवरणम्

लघु-ग्र.मा. [३५]

यह ग्रन्थ पण्डित रामानन्दपति त्रिपाठी द्वारा लिखा गया है। इसका प्रकाशन 'हिन्दी-व्याख्या' के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८० ३.५०

३. नयनप्रसादिन्याः समीक्षणम्

स.भअ.मा. [३५]

इस ग्रन्थ के लेखक वेदान्त-दर्शन के आचार्य डॉ. पारसनाथ द्विवेदी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २२६ ४४.००

४. खण्डनखण्डखाद्यम्

स.भ.ग्र.मा. [१२९]

श्रीहर्ष द्वारा प्रणीत यह ग्रन्थ श्री रघुनाथशिरोमणि द्वारा विरचित 'खण्डनभूषामणि' टीका के साथ प्रकाशित हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४८० १२०.००

५. श्रीमद्भगवद्गीता

म.म.गो.क.ग्र.मा. [४]

यह ग्रन्थ श्रीधराचार्य की 'सुबोधिनी' व्याख्या के साथ प्रकाशित हुआ है। इसके सम्पादक विश्रुत मनीषी डॉ. राजदेव मिश्र हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २२४ ७२.००

६. श्रीमद्भगवद्गीता

स.भ.ग्र.मा. [१२६]

इस ग्रन्थ का प्रकाशन पण्डित श्रीवंशीधर मिश्र द्वारा लिखित 'वंशी' संस्कृत-टीका के साथ हुआ है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ५१२ — ९६.००

७. दी ट्रायून पाथ (श्रीमद्भगवद्गीता-एक अध्ययन)

स.भ.अ.मा. [३१]

अंग्रेजी-भाषा में प्रणीत इस ग्रन्थ के लेखक विश्रुत दार्शनिक डॉ. गौरीनाथ शास्त्री हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ११८ — १७.००

८. श्रीभाष्यपरिष्कारः

ल.ग्र.मा. [४६]

यह ग्रन्थ श्रीदेशिकाचार्य द्वारा प्रणीत है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४८ — ६.००

९. तत्त्वमुक्ताकलापः

स.भ.ग्र.मा. [१२८]

इस ग्रन्थ के लेखक निगमान्तमहादेशिक हैं। इसका प्रकाशन 'सर्वार्थ-सिद्धि', 'आनन्ददायिनी' तथा 'अक्षरार्थ' व्याख्याओं के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५६० भाग-१ — १२०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ७२० भाग-२ — २००.००

१०. वेदार्थसङ्ग्रहः

स.भ.ग्र.मा. [१३१]

यह ग्रन्थ श्री रामानुज यतीन्द्र द्वारा प्रणीत है। इसका प्रकाशन पण्डित श्री रामवदन शुक्ल द्वारा विरचित 'चन्द्रिका-तिलक' व्याख्या के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. १७० — ६४.००

११. भक्तिदर्शनविमर्शः

आ.बदरीनाथशुक्ल-स्मृति-ग्रन्थमाला [१]

यह ग्रन्थ आचार्य श्री गोविन्दचन्द्र पाण्डेय द्वारा प्रणीत है। इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने भक्तिदर्शन के विविध पक्षों का गम्भीर विश्लेषण किया है।
आकार : डिमाई, पृ.सं. १३४ ४०.००

१२. दर्शनबिन्दुसङ्ग्रहः

म.म.गो.क.ग्र.मा. [५]

इस ग्रन्थ का प्रकाशन बौद्धदर्शन, शैवदर्शन, शब्दाद्वैतदर्शन, राजनीतिदर्शन एवं न्यायदर्शन आदि के विशिष्ट व्याख्यानों के सङ्कलन के रूप में किया गया है।
आकार : रायल, पृ.सं. ४२४ भाग-१ १५०.००
आकार : रायल, पृ.सं. २९६ भाग-२ ११०.००

१३. वेदान्तकौस्तुभप्रभा

वि.वि.द्विशताब्दी-ग्र.मा. [७]

श्री केशवकाश्मीरि भट्ट द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'पण्डित-परिक्रमा' के षष्ठ स्तबक के रूप में किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. विजय नारायण मिश्र हैं।
आकार : रायल, पृ.सं. ३९२ ३००.००

१४. तत्त्वमुक्तावली

वि.वि.द्विशताब्दी-ग्र.मा. [६]

गौडपूर्णानन्द चक्रवर्ती द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'पण्डित-परिक्रमा' के पञ्चम स्तबक के रूप में श्री ई. बी. कावेल के आङ्गल-भाषानुवाद के साथ हुआ है। इसका सम्पादन डॉ. विजय नारायण मिश्र ने किया है।
आकार : रायल, पृ.सं. ५६ ५०.००

१५. श्रीरामानुजमतसङ्ग्रहः

लघु-ग्र.मा. [४९]

श्रीनिवासपाट्टरार्य महादेशिक द्वारा विरचित इस ग्रन्थ में विशिष्टाद्वैत के सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। इसका सम्पादन श्री ना.कृ. रामानुज ताताचार्य ने किया है।
आकार : रायल, पृ.सं. ४० १०.००

१६. अद्वैतमकरन्दः

वि.वि.द्विशताब्दी-ग्र.मा. [५]

श्री लक्ष्मीधर कवि द्वारा प्रणीत अद्वैतवेदान्त का यह अनुपम ग्रन्थ श्री स्वयंप्रकाशयति द्वारा प्रणीत 'रसाभिव्यञ्जिका' व्याख्या एवं श्री ए.ई.गफ द्वारा रचित सम्पूर्ण ग्रन्थ के साङ्गोपाङ्ग 'आङ्ग्ल-भाषानुवाद' से विभूषित है। 'पण्डित-परिक्रमा' के चतुर्थ स्तबक के रूप में प्रकाशित इस ग्रन्थ का सम्पादन डॉ. विजय नारायण मिश्र ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८८ १००.००

१७. न्यायसिद्धाञ्जनम् (द्वितीय संस्करण)

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [२]

श्री वेदान्तदेशिक द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री नीलमेघाचार्य द्वारा प्रणीत 'हिन्दी-भाषानुवाद' के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७६० २१०.००

१८. शाण्डिल्य-संहिता (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [६०]

नारदपाञ्चरात्र-संहिताओं में अन्यतम श्रीशाण्डिल्य महर्षि द्वारा प्रणीत इस संहिता में जगत् का प्रादुर्भाव, भक्तिसम्प्रदाय, आचरणीयाचार, युगपरिमाणादि, कलियुग के कर्त्तव्याकर्त्तव्य तथा धर्माधर्मादि विषयों का सम्यक् रूप से समालोचन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३९२ १३२.००

१९. खण्डनखण्डखाद्य—प्रमापक्ष

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [२४]

यह ग्रन्थ स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी द्वारा प्रणीत है। इसमें विद्वान् लेखक ने 'खण्डनखण्डखाद्य' ग्रन्थ का आलोडन करते हुए 'प्रमा' का वैदुष्यपूर्ण विचार किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३९२ ३००.००

२०. शाण्डिल्यभक्तिसूत्रम् (तृतीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [९]

भक्तिशास्त्र का यह ग्रन्थ आचार्य श्री शाण्डिल्य मुनि के द्वारा प्रणीत है।

इस पर श्री नारायण तीर्थ द्वारा लिखित 'भक्तिचन्द्रिका' टीका प्रकाशित हुई है। इस ग्रन्थ में परिशिष्ट के रूप में **स्वप्नेश्वरभाष्य, भक्ति-तत्त्वविवरण, त्रिविधभक्ति-विवरण, नारद-भक्तिसूत्र, भक्तिमीमांसा** एवं **परभक्तिसूत्र** भी दिया गया है। इस ग्रन्थ के सम्पादक पद्मविभूषण आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय जी हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३६८ १००.००

२१. एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति

प्राचार्य ग्रिफिथस्मृति-ग्र.मा. [१]

आचार्य श्री गोविन्द चन्द्र पाण्डेय द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में धर्मों का अद्वैत, सम्प्रदाय-भेद, आध्यात्मिकानुभूति-विवेचनपद्धति, मृत्युबोध आदि विषयों का गम्भीर अनुशीलन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ९६ ८०.००

२२. उपेन्द्रविज्ञानसूत्रम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [७३]

श्री उपेन्द्रदत्त शर्मा द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन स्वोपज्ञ टीका के साथ किया गया है। वेदान्त-सिद्धान्तों के ज्ञान में परम उपयोगी यह ग्रन्थ म.म. श्री गोपीनाथ कविराज की विस्तृत भूमिका से अलङ्कृत है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ११२ ८०.००

२३. वेदान्तपरिभाषा

स.भ.ग्र.मा. [१३८] ISBN : 81-7270-022-9

श्री धर्मराजाध्वरीन्द्र द्वारा प्रणीत वेदान्त-शास्त्र के इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ का प्रकाशन श्री रामकृष्णाध्वरि-कृत 'शिखामणि' व्याख्या तथा स्वामी श्री अमरदास द्वारा प्रणीत सुविस्तृत 'मणिप्रभा' व्याख्या के साथ किया गया है। विस्तृत भूमिका तथा अनुसन्धानात्मक परिशिष्टों के साथ इसका सम्पादन प्रो. पारसनाथ द्विवेदी एवं डॉ. ददन उपाध्याय ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५५२ ४००.००

२४. बृहदारण्यकवार्तिकसारः

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [१६]

श्री विद्यारण्य स्वामी द्वारा प्रणीत वेदान्त-शास्त्र के इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ का प्रकाशन म.म. पं. श्री हरिहरकृपालु द्विवेदी द्वारा प्रणीत हिन्दी-

भाषानुवाद के साथ किया गया है। इसका सम्पादन आचार्य श्री वाचस्पति द्विवेदी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७०८ भाग-१ २५०.००

आकार : रायल, पृ.सं. ६३० भाग-२ २५०.००

आकार : रायल, पृ.सं. ६६८ भाग-३ २४०.००

आकार : रायल, पृ.सं. ७६८ भाग-४ २७०.००

२५. विवेकज्योतिः

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [३५] ISBN : 81-7270-031-8

स्वामी सच्चित्तीर्थ द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में वेदान्तशास्त्र सम्बन्धी लगभग १३५० प्रश्नों का प्रभावोत्पादक समाधान हिन्दी-भाषा में प्रस्तुत किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. ददन उपाध्याय ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३०४ २८०.००

२६. मध्वमुखालङ्कारः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [६८] ISBN : 81-7270-101-2

वेदान्तशास्त्र के इस महनीय ग्रन्थ में ब्रह्मसूत्र की चतुःसूत्री पर गम्भीर विचार करते हुए शेष सूत्रों का तात्पर्य सङ्कलित किया गया है। इसका सम्पादन पं. श्री नृसिंहाचार्य वरखेड़कर ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ९६ १००.००

२७. वासिष्ठदर्शनम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [६४] ISBN : 81-7270-083-0

श्री भीखनलाल आत्रेय द्वारा दर्शनशास्त्र के इस अपूर्व ग्रन्थ में योगवासिष्ठ तथा महारामायण के विशिष्ट शास्त्रीय सिद्धान्तों का संकलन एवं सम्पादन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ४०८ १५०.००

२८. तत्त्वामृतम्

वेदान्तशास्त्र के इस अपूर्व ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन पुस्तकालय की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। इस ग्रन्थ में श्रीमद्भागवत सम्बन्धी कथाओं का वेदान्त-शास्त्र की दृष्टि से विशद विवेचन किया गया है। इसका सम्पादन पं. श्री आञ्जनेय शास्त्री ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. (यन्त्रस्थ)

२९. उपदेशसाहस्री

स.भ.ग्र.मा. [१४६] ISBN : 81-7270-117-9

श्री शङ्करभगवत्पादाचार्य विरचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन पुस्तकालय की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। इसके सम्पादक प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी हैं। इसमें सम्पूर्ण उपनिषदों का सार सङ्ग्रहीत है।

आकार : रायल, पृ.सं. २८० २८०.००

३०. सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहः

गङ्गा.झा.ग्र.मा. [२४] ISBN : 81-7270-137-3 (Set)

इस ग्रन्थ का प्रकाशन कृष्णालङ्कार संस्कृतव्याख्या तथा हिन्दी व्याख्या एवं वेदान्तसूक्तिमञ्जरी के साथ दो खण्डों में किया गया है। इसके सम्पादक प्रो. पारसनाथ द्विवेदी एवं सहसम्पादक डॉ. ददन उपाध्याय हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ५४८, भाग-१ ISBN : 81-7270-138-1 ५००.००

आकार : रायल, पृ.सं. ५४४, भाग-२ ISBN : 81-7270-141-1 ५००.००

३१. विवरणप्रमेयसङ्ग्रहः

गङ्गा.झा.ग्र.मा. [२५] ISBN : 81-7270-161-6

श्रीविद्यारण्य मुनि प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन हिन्दी-भाषानुवाद के साथ किया गया है। इसके सम्पादक प्रो. पारसनाथ द्विवेदी एवं सहसम्पादक डॉ. ददन उपाध्याय हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ९३६ १०००.००



६. मीमांसा-दर्शन

१. कल्पकलिका (तर्कपादान्ता)

स.भ.ग्र.मा. [१२२]

यह ग्रन्थ म.म. हरिहर कृपालु द्विवेदी द्वारा प्रणीत है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३३० ५०.००

२. मीमांसानयमञ्जरी

सम्पू.ग्र.मा. [१३]

यह ग्रन्थ 'पद्मभूषण' पण्डित श्री पट्टाभिराम शास्त्री द्वारा निर्मित है।

आकार : रायल, पृ.सं. २७२ भाग-१ ६०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ३४४ भाग-२ १२०.००

३. मीमांसाकुतूहलम्

स.भ.ग्र.मा. [११३]

श्री कमलाकर भट्ट द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का सम्पादन 'पद्मभूषण' पण्डित श्री पट्टाभिराम शास्त्री ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १४४ ४५.००

४. इण्डेक्स टु शाबरभाष्य

स.भ.अ.मा., भा.३ [१]

यह ग्रन्थ मूलरूप से डॉ. जे.ए. जैकब द्वारा अंग्रेजी-भाषा में लिखा गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १५२ २५.००

५. तौतातितमततिलकम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [७९]

मीमांसा-शास्त्र के इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ के प्रणेता श्री भवदेव हैं। मीमांसा-दर्शन का यह ग्रन्थ कुमारिलभट्ट के सिद्धान्त का पोषक है। इस ग्रन्थ का सम्पादन पं. श्री चिन्नस्वामी तथा पं. श्री पी.एन. पट्टाभिराम शास्त्री ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ९५२ ४५०.००

६. तत्त्वबिन्दुः

स.भ.ग्र.मा. [१४२] ISBN : 81-7270-053-9

श्री वाचस्पति मिश्र द्वारा प्रणीत मीमांसाशास्त्र के इस अनुपम ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन पुस्तकालय की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। इस ग्रन्थ का सम्पादन डॉ. रजनीश कुमार शुक्ल ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १३६ १२०.००

७. मीमांसान्यायप्रकाशविमर्शः

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [३४] ISBN : 81-7270-051-2

आपदेवकृत 'मीमांसान्यासप्रकाश' मीमांसाशास्त्र का मानक प्रकरण-ग्रन्थ है। डॉ. कपिलदेव पाण्डेय के 'विवेक' नामक हिन्दी अनुवाद एवं हिन्दी-भाषा में विस्तृत समीक्षात्मक अध्ययन के साथ इसका प्रकाशन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४८८ ४५०.००

८. न्यायरत्नमाला (द्वितीय संस्करण)

पुस्त.दु.ग्र.यो.ग्र.मा. [४]

इस ग्रन्थ के रचयिता श्रीपार्थसारथि मिश्र हैं। इसका प्रकाशन श्रीरामानुजाचार्य की 'नायकरत्न' नामक व्याख्या के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३५२ (यन्त्रस्थ)



८. बौद्धदर्शन तथा पालि-साहित्य

१. पालितिपिटकसद्दानुक्कमणिका

पालि-ग्र.मा. [४]

इस पुस्तक में त्रिपिटकों में आये हुए शब्दों का संकलन और उनका सन्दर्भों के साथ अर्थ-निर्देशन हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ९५२ भाग-१ (यन्त्रस्थ)

आकार : रायल, पृ.सं. ३२० भाग-२ ३६.००

२. विभङ्गमूलटीका

पालि-ग्र.मा. [५]

यह ग्रन्थ आनन्दमहास्थविर द्वारा प्रणीत है तथा इसका प्रकाशन 'अनुटीका' के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५१२ ८५.००

३. अट्ठसालिनी

पालि-ग्र.मा. [६]

भदन्ताचरिय बुद्धघोष द्वारा रचित यह ग्रन्थ 'अत्थयोजना' टीका के साथ प्रकाशित हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७३६ १५६.००

४. अभिधम्ममूलटीका

पालि-ग्र.मा. [७]

यह ग्रन्थ 'अभिधर्मपिटक' के 'धम्मसङ्गणि' ग्रन्थ की टीका है। इसके रचयिता श्री आनन्द थेर हैं। यह पुस्तक बर्मी तथा सिंहली-लिपियों से सर्वप्रथम देवनागरी लिपि में प्रकाशित हुई है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४८० ७०.००

५. विज्ञप्तिमात्रतासिद्धिप्रकरणद्वयम् (द्वितीय-संस्करण)

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [५]

यह ग्रन्थ 'विंशतिका' स्वोपज्ञवृत्ति तथा 'त्रिंशिका' संस्कृत-टीकाओं एवं 'गूढार्थदीपनी' नामक हिन्दी-व्याख्या के साथ प्रकाशित हुआ है। इसके हिन्दी-व्याख्याकार एवं सम्पादक प्रो. रामशंकर त्रिपाठी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ७२० १९०.००

६. सारत्थदीपनी

पालि-ग्र.मा. [८]

भदन्त सारिपुत्त थेर द्वारा रचित इस ग्रन्थ को 'सिंहली' एवं 'बर्मी' लिपियों से 'देवनागरी' लिपि में लिप्यन्तर करके प्रकाशित किया गया है। इसके सम्पादक पालि-भाषा के विख्यात विद्वान् डॉ. ब्रह्मदेव-नारायण शर्मा हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ४६४ भाग-१ १२०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ३८० भाग-२ १३२.००
आकार : रायल, पृ.सं. ५६८ भाग-३ २५०.००

७. धर्मसमुच्चयः

स.भ.अ.मा. [४५]

यह ग्रन्थ श्री अवलोकित सिंह भिक्षु द्वारा प्रणीत है। इसका सम्पादन डॉ. विजयशङ्कर चौबे ने सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर शास्त्रीय टिप्पणियों तथा अनुसन्धानात्मक परिशिष्टों के साथ किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५२० २५०.००

८. अभिधम्मत्थसङ्गहो

पालि-ग्र.मा. [१]

यह आचार्य अनिरुद्ध द्वारा प्रणीत स्थविर-सम्प्रदाय का मूर्धन्य ग्रन्थ है। इसका प्रकाशन भदन्त रेवतधम्म तथा प्रो. रामशङ्कर त्रिपाठी द्वारा लिखित 'हिन्दी-भाषानुवाद' के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५५२ भाग-१ १४०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ७०४ भाग-२ १९०.००

९. जातकट्ठकथा

पालि-ग्र.मा. [२]

यह ग्रन्थ श्रीबुद्धघोषाचार्य द्वारा प्रणीत है। इसका सम्पादन सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर प्रो. लक्ष्मीनारायण तिवारी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २६४ ६०.००

१०. विसुद्धिमग्गो (द्वितीय संस्करण)

पालि-ग्र.मा. [३] ISBN : 81-7270-164-0 (set)

आचार्य बुद्धघोष द्वारा विरचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन भदन्त धर्मपाल कृत 'परमार्थमञ्जूषा' टीका के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६४४ भाग-१ ISBN : 81-7270-163-2 ४००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ५४८ भाग-२ ISBN : 81-7270-165-9 ३५०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ५२० भाग-३ ISBN : 81-7270-166-7 ३४०.००

११. धर्मपदव्याख्यानम्

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [१९] ISBN : 81-7270-071-7

बौद्धदर्शन के मूर्द्धन्य ग्रन्थ 'धम्मपद' के व्याख्यान के रूप में इस ग्रन्थ का प्रणयन 'पद्मश्री' पं. रघुनाथ शर्मा ने किया है। हिन्दी-व्याख्या के साथ इसका सम्पादन उनके यशस्वी सुपुत्र प्रो. नरेन्द्रनाथ पाण्डेय ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४८० ४००.००

१२. बुद्धघोसुप्पत्ति

पालि-ग्र.मा. [९] ISBN : 81-7270-028-8

सिंहली भिक्षु महामंगल नामक एक स्थविर द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन रोमन लिपि से देवनागरी लिपि में लिप्यन्तर करके किया गया है। इसमें आचार्य बुद्धघोष का विस्तृत जीवनवृत्त वर्णित है। इसका सम्पादन डॉ. वीरेन्द्र पाण्डेय ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४० १२.००

१३. सच्चसङ्खेपो

पालि-ग्र.मा. [११] ISBN : 81-7270-030-X

आचार्य धर्मपाल द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में अभिधर्म के सिद्धान्तों का उत्कृष्ट निरूपण किया गया है। इसका सम्पादन आचार्य श्री लक्ष्मी नारायण तिवारी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६४ १६.००

१४. भारतीयसंस्कृतौ प्रव्रजितनारीणामवदानम्

स.भ.अ.मा. [५२] ISBN : 81-7270-086-5

डॉ. रमेश कुमार द्विवेदी द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में भारतीय संस्कृति में प्रव्रजित (संन्यस्त) बौद्ध नारियों के योगदान का अनुसन्धानात्मक विवेचन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २०८ २३२.००

१५. विभज्यवाद

पालि ग्र.मा. [१२] ISBN : 81-7270-127-6

प्रो. ब्रह्मदेव नारायण शर्मा द्वारा प्रणीत अभिधर्मदर्शन से सम्बद्ध इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है। यह थेरवाद बौद्धदर्शन को समझाने के लिये सरल एवं सुबोध भाषा में निबद्ध है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३०४; ३२०.००

१६. महाबोधिवंसो

पालि ग्र.मा. [१३] ISBN : 81-7270-151-9

श्रीमान् उपतिष्य स्थविर द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है। महाबोधिवंस में श्रीलङ्का के अनुराधपुर नामक स्थान पर विद्यमान बोधिवृक्ष का इतिहास पाँच प्रश्नों के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. कोमलचन्द्र जैन हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. १०८ ३२.००

१७. जिनालङ्कार

पालि ग्र.मा. [१४] ISBN : 81-7270-152-7

श्री बुद्धरक्षित भिक्षु द्वारा रचित इस ग्रन्थ में बुद्धत्व-प्राप्ति तक बुद्ध की जीवनी का वर्णन किया गया है। इसके सम्पादक प्रो. प्रद्युम्न दुबे हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २८ २०.००

१८. सद्दत्थभेदचिन्तापालि

पालि ग्र.मा. [१५] ISBN : 81-7270-153-5

श्री सद्दम्मसिरि स्थविर द्वारा कारिकाबद्ध व्याकरण का महत्त्वपूर्ण इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया है। यह कच्चायनव्याकरण सम्प्रदाय का अन्यतम ग्रन्थ है। इसके सम्पादक प्रो. व्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन' एवं सह-सम्पादक डॉ. वीरेन्द्र पाण्डेय हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ४० २०.००

१९. अनागतवंसो

पालि ग्र.मा. [१६] ISBN : 81-7270-154-3

श्री कश्यप थेर विरचित इस ग्रन्थ में १४२ गाथाएँ उपनिबद्ध हैं। जिसमें पालि वाङ्मय में बुद्धों की परम्परा वर्णित है। इसके सम्पादक डॉ. रमेश प्रसाद हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २८ २०.००

२०. वुत्तमालासन्देशशतकम्

पालि ग्र.मा. [१७] ISBN : 81-7270-155-1

श्री गतारा परिवेण उपतपस्सी भिक्षु द्वारा रचित १०२ सुन्दर एवं भिन्न-भिन्न छन्दों में निबद्ध शतक पद्धति की इस वृत्तमाला को प्रकाशित किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. रामनक्षत्र प्रसाद हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २४ २०.००

२१. दसबोधिसत्तुप्पत्तिकथा

पालि ग्र.मा. [१८] ISBN : 81-7270-156-X

यह लघु ग्रन्थ इन बोधिसत्त्वों के जन्म सम्बन्धी वृत्तान्त एवं बुद्ध-प्राप्ति का प्रकाशक है। इसके सम्पादक डॉ. सुरेन्द्र कुमार हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ४४ २४.००

२२. पट्ठानुद्देसदीपनी

पालि ग्र.मा. [१९] ISBN : 81-7270-157-8

महाथेर लेदि सयदाब विरचित यह ग्रन्थ अधिधम्म पिटक के सातवें ग्रन्थ पट्ठानप्पकरण के दर्शनों का संक्षिप्त रूप प्रकाशित करता है। इसके सम्पादक डॉ. विमलेन्द्र कुमार है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४४ २४.००

२३. जिनकालमाली

पालि ग्र.मा. [२०]

पालि में वंस-साहित्य का महत्त्वपूर्ण यह ग्रन्थ नागरी लिप्यन्तर के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। इसका लिप्यन्तर एवं सम्पादन डॉ. हरप्रसाद दीक्षित ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. .... (शीघ्र प्रकाश्य)



८. धर्मशास्त्र तथा नीतिशास्त्र

१. नृसिंहप्रसादः [संस्कारसारः] (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [५५]

श्री दलपत महाराज द्वारा निर्मित इस ग्रन्थ का प्रकाशन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित करके किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३६८ (यन्त्रस्थ)

२. भारतीयकर्मकाण्डस्वरूपाध्ययनम्

स.भ.अ.मा. [२६]

इस ग्रन्थ के रचयिता स्व. डॉ. विन्ध्येश्वरी प्रसाद त्रिपाठी हैं। लेखक ने इस ग्रन्थ में भारतीय कर्मकाण्ड के सभी पक्षों का साङ्गोपाङ्ग विवेचन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २४० २६.००

३. श्राद्धविमर्शः

स.भ.अ.मा. [२९] ISBN : 81-7270-070-9

इस ग्रन्थ के लेखक डॉ. उमाशङ्कर त्रिपाठी हैं। लेखक ने इस ग्रन्थ में भारतीय परिवेश में श्राद्ध के ऊपर धर्मशास्त्रीय एवं वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १०८ २२.००

४. श्राद्धकल्पः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.अ.मा. [१८] ISBN : 81-7270-070-9

श्रीदत्तोपाध्याय कृत इस ग्रन्थ का सम्पादन डॉ. अशोक चटर्जी शास्त्री ने किया है। मैथिल-सम्प्रदाय के इस ग्रन्थ की विशिष्ट समीक्षा सम्पादक द्वारा हुई है।

आकार : रायल, पृ.सं. २१६ १२०.००

५. त्रिस्थलीसेतुः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [६५]

श्री भट्टोजिदीक्षित द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में तीर्थविधि का सामान्यतः वर्णन करके काशी, प्रयाग तथा गया प्रभृति तीर्थों की विशेष महिमा

वर्णित है। विषय की दृष्टि से इस ग्रन्थ के साथ दो अन्य ग्रन्थ भी निबन्धित हैं–

१. **तीर्थेन्दुशेखरः**–श्री नागेश भट्ट द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में तीर्थों के अधिकारी आदि के निर्णय के अनन्तर प्रयाग, काशी तथा गया आदि तीर्थों की विधि का विचार किया गया है।

२. **काशीमृतिमोक्षविचारः**–श्री सुरेश्वराचार्य द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में काशी, वाराणसी, अविमुक्त, अन्तर्गृह नामक चार क्षेत्रों के परिमाण का निर्णय किया गया है तथा उन-उन क्षेत्रों में मृत्यु होने से सारूप्य, सालोक्य, सायुज्य, सान्निध्य रूप मुक्तियों के मिलने का विधान है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १४४ — १००.००

६. कालतत्त्वविवेचनम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [४०]

धर्मशास्त्र के इस ग्रन्थ का प्रणयन आचार्य श्री रघुनाथ भट्ट ने किया है। इसके सम्पादक डॉ. हरिवंश कुमार पाण्डेय हैं। इस ग्रन्थ में कालतत्त्व का विवेचन एवं विश्लेषण धर्मशास्त्रीय व्यवस्थाओं के अनुरूप किया गया है और प्रसंगों के अनुसार ज्योतिषशास्त्र तथा समस्त दर्शनों की कालविवेचना के निष्कर्षों से तुलना की गयी है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ५९२ भाग-१ — २९०.००

७. स्मार्तोल्लासः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [४३]

श्री शिवप्रसाद पाठक द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में आवसथ्याग्नि साध्य शुक्लयजुःगृह्यकर्म का साङ्गोपाङ्ग विवेचन किया गया है। इस ग्रन्थ की रचना पारस्करगृह्यसूत्र के आधार पर की गयी है। इसका सम्पादन डॉ. श्रीकिशोर मिश्र ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ४३२ — २५०.००

८. नवरात्रप्रदीपः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [२३]

पण्डित श्री विनायक धर्माधिकारी द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में नवरात्र-व्रत तथा देवीपूजा की प्रक्रिया का प्रामाणिक वर्णन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ११२ — ६०.००

९. द्वैतनिर्णयसिद्धान्तसंग्रहः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [७५]

पण्डित श्री भानुभट्ट द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में व्रत, पर्व, अशौच, श्राद्ध, होम, तीर्थयात्रा, मांसभक्षण, दान तथा प्रायश्चित्त प्रभृति धर्मशास्त्रीय विषयों के निर्णय का विस्तृत रूप में विवेचन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ११२ ६०.००

१०. व्रतकोशः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [२८]

दाक्षिणात्य एवं उदीच्य विद्वानों के प्रामाणिक निबन्धों के आधार पर इस ग्रन्थ का प्रणयन पं. श्री जगन्नाथ शास्त्री होशिंग ने किया है। आधार-ग्रन्थों का नाम तथा संकेत भी इस ग्रन्थ में दिया गया है। इसके आधार पर व्रतों के सम्बन्ध में जानकारी निर्दिष्ट ग्रन्थ में उपलब्ध होगी।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ४०१ १२०.००

११. धर्मशास्त्रीयव्यवस्थापत्रसङ्ग्रहः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [८५]

डॉ. सुभद्र झा द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ में न्यायालय में उपस्थित वादों पर श्री वैद्यनाथ मिश्र तथा अन्य विद्वानों द्वारा दी गयी व्यवस्था का संग्रह है। यह संग्रह अधिवक्ताओं तथा धर्मशास्त्रीय व्यवस्था लिखने वाले विद्वानों के लिए संग्रहणीय है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. (शीघ्र प्रकाश्य)

१२. संस्कारदीपकः (द्वितीय संस्करण)

म.म.गो.क.ग्र.मा. [१] ISBN : 81-7270-036-6

श्री हर्षनाथ झा द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में पारस्करगृह्यसूत्र के अनुसार तेरह संस्कारों का विवेचन किया गया है। संस्कारों के ज्ञान के लिए परमोपयोगी इस ग्रन्थ का सम्पादन पं. श्री दुर्गाधर झा ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३४२ १५०.००

१३. दुर्गासप्तशती

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [२२] ISBN : 81-7270-121-7

दुर्गासप्तशती के इस उत्कृष्ट संस्करण में प्राचीन एवं दुर्लभ सात संस्कृत-टीकाओं का संयोजन किया गया है। विशिष्ट भूमिका एवं आवश्यक परिशिष्टादि के साथ इसका सम्पादन डॉ. गिरिजेश कुमार दीक्षित ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ९०४ ८००.००

१४. आचारेन्दुः

स.भ.ग्र.मा. [१४०] ISBN : 81-7270-025-3

धर्मशास्त्र-प्रतिपादित दैनन्दिन जीवन के आचारों का प्रतिपादक यह ग्रन्थ आचार्य श्री त्र्यम्बक माटे द्वारा प्रणीत है। विस्तृत भूमिका एवं परिशिष्टों के साथ इसका सम्पादन डॉ. व्यास मिश्र ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ५६० ३१६.००

१५. कालिदासकृतग्रन्थेषु पौरोहित्यतत्त्वविमर्शः

स.भ.अ.मा. [५१] ISBN : 81-7270-085-7

डॉ. जयप्रकाश पाण्डेय द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में महाकवि कालिदास द्वारा प्रणीत ग्रन्थों में समागत पौरोहित्य (कर्मकाण्ड) सम्बन्धी विषयों का अनुसन्धानात्मक विवेचन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १७२ २००.००

१६. शिलान्यास एवं वास्तुपूजन-पद्धति

संस्कार-ग्र.मा. [१] ISBN : 81-7270-058-X

प्रो. युगलकिशोर मिश्र द्वारा प्रणीत इस महनीय ग्रन्थ में गृहारम्भ के समय सम्पन्न होने वाले शिलान्यास एवं वास्तु-पूजन की विधि का साङ्गोपाङ्ग निरूपण किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ४८ ३०.००

१७. गर्भाधान-पुंसवन-सीमन्तोन्नयन-संस्कार

संस्कार-ग्र.मा. [२] ISBN : 81-7270-059-8

डॉ. कमलाकान्त त्रिपाठी द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में गर्भाधान, पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन संस्कारों की समन्त्रक विधि का विशद विवेचन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ४६ ३०.००

१८. जातकर्म-संस्कार

संस्कार-ग्र.मा. [३] ISBN : 81-7270-060-1

डॉ. जयप्रकाश पाण्डेय द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में सन्तान के जन्म के पश्चात् होने वाले संस्कार की साङ्गोपाङ्ग विधि का विवेचन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३२ २४.००

१९. नामकरण-संस्कार

संस्कार-ग्र.मा. [४] ISBN : 81-7270-061-X

डॉ. कुञ्जबिहारी शर्मा द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में सन्तान के नामकरण के अवसर पर सम्पन्न होने वाली विधि का साङ्गोपाङ्ग समन्त्रक निरूपण किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ४८ ३०.००

२०. अन्नप्राशन-संस्कार

संस्कार-ग्र.मा. [५] ISBN : 81-7270-062-8

डॉ. कुञ्जबिहारी शर्मा द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में सन्तान के सर्वप्रथम अन्न-ग्रहण के समय सम्पन्न होने वाली विधि का समन्त्रक निरूपण किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ५२ ३२.००

२१. चूडाकरण-संस्कार

संस्कार-ग्र.मा. [६] ISBN : 81-7270-063-6

इसको मुण्डन-संस्कार भी कहा जाता है। इस ग्रन्थ में उक्त अवसर पर सम्पन्न होने वाली विधि का साङ्गोपाङ्ग निरूपण किया गया है। इसके लेखक डॉ. महेन्द्र पाण्डेय हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ७६ ३२.००

२२. कर्णवेध-संस्कार

संस्कार-ग्र.मा. [७] ISBN : 81-7270-064-4

भारतीय संस्कार के अन्तर्गत कर्णछेदन का अत्यन्त महत्त्व वर्णित है। डॉ. महेन्द्र पाण्डेय द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में उक्त अवसर पर सम्पन्न होने वाली विधि का समन्त्रक निरूपण किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ४० २४.००

२३. यज्ञोपवीत-वेदारम्भ-समावर्तन-संस्कार

संस्कार-ग्र.मा. [८] ISBN : 81-7270-065-2

डॉ. राममूर्ति चतुर्वेदी द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में यज्ञोपवीत, वेदारम्भ एवं समावर्तन संस्कार की विधि का समन्त्रक विवेचन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ८६ ४०.००

२४. केशान्त-संस्कार

संस्कार-ग्र.मा. [९]

ISBN : 81-7270-066-0

डॉ. महेन्द्र पाण्डेय द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में वेदाध्ययन के पश्चात् गृहस्थाश्रम में प्रवेश के समय सम्पन्न होने वाली विधि का समन्त्रक विवेचन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ७२ — ३२.००

२५. विवाह-संस्कार

संस्कार-ग्र.मा. [१०]

ISBN : 81-7270-067-9

डॉ. पतञ्जलि मिश्र द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में विवाह-संस्कार का विशद विवेचन किया गया है, साथ ही समग्र वैवाहिक विधि का समन्त्रक निरूपण भी किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ९६ — ४०.००

विशेष : क्रम-संख्या १७ से २६ तक के ग्रन्थों का प्रकाशन 'संस्कार-ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत किया गया है। इन सभी ग्रन्थों का सम्पादन माननीय कुलपति प्रो.राममूर्ति शर्मा ज़ी ने किया है। इन दस ग्रन्थों के एक सेट का मूल्य (पेपरबैक में) रू. ३००.०० सर्वसुलभ कराने के लिए निर्धारित किया गया है।

२६. भारतीयविचारदर्शनम्

सम्पू.ग्र.मा. [९]

यह ग्रन्थ राजनीतिशास्त्र के विद्वान् डॉ. हरिहरनाथ त्रिपाठी द्वारा लिखा गया है। संस्कृत-भाषा में लिखे गये इस ग्रन्थ में भारतीय-राजनीतिशास्त्र और उसके अनुसार समाज एवं अर्थ-व्यवस्था का चित्रण किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५१६ भाग-१ — ४०.००

आकार : रायल, पृ.सं. ६६० भाग-२ — १०५.६०

२७. नीतिविधिविमर्शः

सम्पू.ग्र.मा. [१४]

इस ग्रन्थ के लेखक डॉ. हरिहरनाथ त्रिपाठी ने भारतीय-नीतिशास्त्र तथा विधिशास्त्र का विवेचन संस्कृत-भाषा के माध्यम से किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४८० भाग-१ — ८५.००

आकार : रायल, पृ.सं. ५२० भाग-२ — २५०.००

२८. कौटलीयमर्थशास्त्रम्

स.भ.ग्र.मा. [१३०]

आचार्य विष्णुगुप्त द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन म.म. टी. गणपतिशास्त्री की 'श्रीमूला', पण्डितराज राजेश्वर शास्त्री की 'वैदिकसिद्धान्तसंरक्षिणी' एवं 'जयमङ्गलाक्रोडपत्र', श्री शङ्करार्य की 'जयमङ्गला' एवं श्रीयोग्घमाचार्य की 'नीतिनिर्णीति' व्याख्याओं के साथ हुआ है। इसका सम्पादन 'शास्त्ररत्नाकर' श्री विश्वनाथ शास्त्री दातार ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५६० भाग-१, सम्पुट-१ — १४०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ४२४ भाग-१, सम्पुट-२ — ११६.००
आकार : रायल, पृ.सं. ६५६ भाग-२, सम्पुट-१ — १६०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ३२० भाग-२, सम्पुट-२ — ९०.००

२९. पाश्चात्त्यभारतीयराजनीत्योः समालोचनम्

सम्पू.ग्र.मा. [१९] ISBN : 81-7270-004-0 Set

इस ग्रन्थ के लेखक पण्डित श्री विश्वनाथ शास्त्री दातार जी हैं। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में पाश्चात्त्य तथा भारतीय राजनीति का अत्युत्कृष्ट अनुसन्धानात्मक समालोचन प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६२०, भाग-१ — ५००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ६६४, भाग-२ ISBN : 81-7270-003-2 — ५५०.००

३०. मानवनीतिविवेचनम्

स.भ.ग्र.मा. [५०] ISBN : 81-7270-001-6

प्रो. राधेश्यामधर द्विवेदी द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में भारतीय समाजनीति तथा मानवनीति का अनुसन्धानात्मक विश्लेषण किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २५२ — २८०.००

३१. प्रदीपकलिका

स.भ.ग्र.मा. [१५१] ISBN : 81-7270-135-7

श्री विश्वेश्वर पण्डित द्वारा विरचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। इसमें धर्मशास्त्रीय विषयों का प्रतिपादन हुआ है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २३२ — १८०.००

३२. काशीवैभवसमुच्चयः

स.भ.ग्र.मा. [१५३] ISBN : 81-7270-167-5

काशी के वैभव को प्रख्यापित करने वाले चौदह हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को सम्पादित कर इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है। इसके सम्पादक श्री रमापद चक्रवर्ती हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ४३२ — ३००.००

३३. काशीस्थितिचन्द्रिका

स.भ.ग्र.मा. [१५२]

ISBN : 81-7270-168-3

श्री सदाशिव द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वती-भवन पुस्तकालय के हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। इसके सम्पादक श्री रमापद चक्रवर्ती हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ५५४ ३८०.००

३४. पुरुषार्थचिन्तामणिः

श्री विष्णुभट्ट विरचित इस ग्रन्थ में धर्मशास्त्र के विषयों का साङ्गोपाङ्ग विवेचन हुआ है। इसके सम्पादक डॉ. व्यास मिश्र हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. .... (शीघ्र प्रकाश्य)



९. तन्त्रशास्त्र

१. योगिनीहृदयम् (चतुर्थ संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [७]

यह तन्त्रशास्त्र का मूर्धन्य ग्रन्थ माना जाता है। इसका प्रकाशन अमृतानन्द योगी की 'दीपिका' एवं आचार्य श्री भास्कर राय की 'सेतुबन्ध' टीकाओं के साथ हुआ है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ४२० (शीघ्र प्रकाश्य)

२. शारदातिलकम्

योगतन्त्र-ग्र.मा. [२७] ISBN : 81-7270-038-5 Set

इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'पदार्थादर्श' टीका के साथ हुआ है। सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर इसका सम्पादन आचार्य श्री करुणापति त्रिपाठी जी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४६४ भाग-१ १५०.००

आकार : रायल, पृ.सं. ४३२ भाग-२ ISBN : 81-7270-032-6 २४०.००

३. परमानन्दतन्त्रम्

योगतन्त्र-ग्र.मा. [९]

यह ग्रन्थ पण्डित श्री शिवानन्द पन्त द्वारा विरचित 'सुबोधा' नामक संस्कृत-व्याख्या के साथ प्रकाशित हुआ है। अनुसन्धानात्मक परिशिष्टों तथा विवरणात्मक भूमिका के साथ इसका सम्पादन पण्डित श्री रघुनाथ मिश्र ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७२८ ९६.००

४. अष्टप्रकरणम्

योगतन्त्र-ग्र.मा. [१२]

यह शैवागम का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसके सम्पादक तन्त्रशास्त्र के प्रख्यात विद्वान् पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ४४० ८०.००

५. सात्वतसंहिता (द्वितीय संस्करण)

पु.दु.ग्र.यो.ग्र.मा. [६] ISBN : 81-7270-016-4

इस ग्रन्थ का प्रकाशन अलशिंग भट्ट की व्याख्या के साथ हुआ है। यह ग्रन्थ वैष्णव-तन्त्रों में मूर्धन्य माना जाता है। इसके भी सम्पादक पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ६९६ ३८०.००

६. नित्याषोडशिकार्णवः

योगतन्त्र-ग्र.मा. [१]

इस ग्रन्थ का प्रकाशन शिवानन्द की 'ऋजुविमर्शिनी' तथा विद्यानन्द की 'पदार्थरत्नावली' टीकाओं के साथ हुआ है। इस ग्रन्थ के भी सम्पादक पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ५६० ७६.००

७. शाक्तानन्दतरङ्गिणी

योगतन्त्र-ग्र.मा. [११]

श्री ब्रह्मानन्द गिरि द्वारा प्रणीत यह ग्रन्थ हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित करके प्रकाशित हुआ है। विवरणात्मक भूमिका तथा विविध परिशिष्टों के साथ इसका सम्पादन डॉ. राजनाथ त्रिपाठी ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३८४ ४४.००

८. रुद्रयामलम् (द्वितीय संस्करण)

योगतन्त्र-ग्र.मा. [७]

तन्त्रशास्त्र का यह प्राणभूत ग्रन्थ है। इसका सम्पादन शास्त्रीय टिप्पणियों तथा गवेषणापूर्ण परिशिष्टों के साथ हुआ है। इसका सम्पादन मनीषी विद्वान् आचार्य श्री रामप्रसाद त्रिपाठी जी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५२८ भाग-१ १३२.००

आकार : रायल, पृ.सं. ५१२ भाग-२ १६४.००

९. महार्थमञ्जरी (तृतीय संस्करण)

योगतन्त्र-ग्र.मा. [५]

तन्त्रशास्त्र का प्राणभूत यह ग्रन्थ श्री महेश्वरानन्द द्वारा प्रणीत है। इसका प्रकाशन 'स्वोपज्ञ-परिमल' व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २८८ — १००.००

१०. श्रीत्रिपुरार्णवतन्त्रम्

योगतन्त्र-ग्र.मा. [१३]

यह तन्त्रशास्त्र का मूर्धन्य ग्रन्थ माना जाता है। इसका सम्पादन सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर शास्त्रीय टिप्पणियों तथा गवेषणापूर्ण परिशिष्टों के साथ हुआ है। इसके सम्पादक डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. १६८ — ९६.००

११. तन्त्रसङ्ग्रहः (द्वितीय संस्करण)

योगतन्त्र-ग्र.मा. [३] ISBN : 81-7270-091-1 Set

इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'विरूपाक्षपञ्चाशिका', 'साम्बपञ्चाशिका' एवं 'स्पन्दप्रदीपिका' आदि विभिन्न तन्त्रों के सङ्कलन के रूप में किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३०४ भाग-१ ISBN : 81-7270-092-X — १४०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ५२८ भाग-२ ISBN : 81-7270-093-8 — १५०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ४६४ भाग-३ — (यन्त्रस्थ)
आकार : डिमाई, पृ.सं. ४५६ भाग-४ — ७०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ४१० भाग-५ — १४०.००

१२. गौतमीयमहातन्त्रम्

योगतन्त्र-ग्र.मा. [१४]

तन्त्रशास्त्र के इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित करके किया गया है। गवेषणापूर्ण परिशिष्टों के साथ इसका सम्पादन आचार्य श्री रामजी मालवीय ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३६० — ८०.००

१३. नरेश्वरपरीक्षा

योगतन्त्र-ग्र.मा. [१५] ISBN : 81-7270-009-1

आचार्य श्री सद्योज्योति द्वारा विरचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री रामकण्ठाचार्य द्वारा रचित 'प्रकाश' व्याख्या के साथ किया गया है। इसका सम्पादन शास्त्रीय टिप्पणियों के साथ आचार्य श्री रामजी मालवीय ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ५७६ २००.००

१४. श्रीतन्त्रालोकः

योगतन्त्र-ग्र.मा. [१७] ISBN : 81-7270-017-2 Set

आचार्य श्री अभिनवगुप्त द्वारा विरचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन आचार्य श्री जयरथ की 'विवेक' एवं डॉ. परमहंस मिश्र की 'नीर-क्षीर-विवेक' हिन्दी-व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ६४० भाग-१* ISBN : 81-7270-018-0 १६०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ६४० भाग-२* ISBN : 81-7270-019-9 १५०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ७०४ भाग-३* ISBN : 81-7270-078-4 २००.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ८२४ भाग-४ १८०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ५१२ भाग-५ १८०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ७२८ भाग-६ १८०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ६७२ भाग-७ २३०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ७०४ भाग-८ १६०.००

१५. सुन्दरीमहोदयः

योगतन्त्र-ग्र.मा. [२०]

श्री शङ्करानन्द नाथ द्वारा प्रणीत तन्त्रशास्त्र के इस अपूर्व ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित कराकर किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १७६ १५०.००

---

* द्वितीय संस्करण।

१६. कालीकल्पद्रुवल्लरी

योगतन्त्र-ग्र.मा. [२५]

तन्त्रशास्त्र के इस अपूर्व ग्रन्थ का प्रकाशन 'काली-स्तुतियों' का विविध शास्त्रों से संग्रह करके किया गया है। इसका वैदुष्यपूर्ण सम्पादन पण्डित श्री रामनारायण त्रिपाठी ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ५७६ — २४०.००

१७. उत्तरषट्कम्

योगतन्त्र-ग्र.मा. [२२]

तन्त्रशास्त्र के इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन की हस्त-लिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित कराकर किया गया है। इसका वैदुष्यपूर्ण तथा वैज्ञानिक सम्पादन पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी तथा डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १२० — ८०.००

१८. लुप्तागमसङ्ग्रहः

योगतन्त्र-ग्र.मा. [२]

तन्त्र-शास्त्र के इस ग्रन्थ का सम्पादन पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी ने किया है। यद्यपि आगमों की परम्परा का लोप होने से अनेक ग्रन्थ लुप्त हो गये हैं, तथापि उपलब्ध आगम-ग्रन्थों एवं टीकाओं में उद्धृत आगम-वचनों का सङ्ग्रह इस ग्रन्थ में किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २४८ भाग-१ — १३०.००

आकार : रायल, पृ.सं. २८० भाग-२ — (यन्त्रस्थ)

१९. त्रिकदर्शनम्

आचार्य बदरीनाथ शुक्ल स्मृति-ग्र.मा. [२]

यह ग्रन्थ प्रो. रामचन्द्र द्विवेदी द्वारा प्रणीत है। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में त्रिक-दर्शन के ज्ञानपक्ष एवं साधना-पक्ष तथा अन्यान्य विषयों का गम्भीर विश्लेषण किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८० — १००.००

२०. स्वच्छन्दतन्त्रम्

योगतन्त्र-ग्र.मा. [१७]

तन्त्रशास्त्र के इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ का प्रकाशन महामाहेश्वराचार्य श्री क्षेमराज द्वारा प्रणीत 'उद्द्योत' व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १६० भाग-१ १००.००

आकार : डिमाई, पृ.सं. १७६ भाग-२ ५०.००

आकार : डिमाई, पृ.सं. २१६ भाग-३ ५०.००

आकार : डिमाई, पृ.सं. २७२ भाग-४ ६०.००

आकार : डिमाई, पृ.सं. १६० भाग-५ ५०.००

२१. त्रिपुरारहस्यम् (तृतीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [१५]

तन्त्रशास्त्र के इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ का प्रकाशन पण्डित श्री श्रीनिवास द्वारा प्रणीत 'तात्पर्यदीपिका' व्याख्या के साथ किया गया है। इसका सम्पादन म.म. गोपीनाथ कविराज ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ५४८ १४०.००

२२. ज्ञानदीपविमर्शिनी

योगतन्त्र-ग्र.मा. [२६]

तन्त्रशास्त्र के इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ का प्रकाशन 'सरस्वतीभवन' की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित कराकर किया गया है। इसका वैदुष्यपूर्ण तथा वैज्ञानिक सम्पादन पण्डित श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी एवं डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३५२ २२०.००

२३. भास्करराय भारती दीक्षित—व्यक्तित्व एवं कृतित्व

योगतन्त्र-ग्र.मा. [२१]

इस ग्रन्थ में भास्करराय भारती दीक्षित के लोकोत्तर व्यक्तित्व एवं कृतित्व का वैज्ञानिक आलोचन प्रस्तुत किया गया है। इसका सम्पादन पण्डित श्री बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते तथा डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६२६ ३००.००

२४. युक्तिदीपिका

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [१५]

श्रीमदाचार्य ईश्वरकृष्ण द्वारा प्रणीत सांख्यदर्शन के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का प्रकाशन आचार्य श्री केदारनाथ त्रिपाठी की विमर्शपूर्ण 'कला' हिन्दी-व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६०० ३००.००

२५. भास्करराय-ग्रन्थावली

योगतन्त्र-ग्र.मा. [२४] ISBN : 81-7270-110-1 Set

तन्त्रशास्त्र के अद्वितीय विद्वान् महामनीषी भास्करराय भारती दीक्षित जी की समग्र कृतियों का सङ्कलन करके अनुसन्धानात्मक परिशिष्टों तथा विमर्शात्मक टिप्पणियों के साथ उनका क्रमशः सम्पादन आचार्य पं. वटुकनाथ शास्त्री खिस्ते एवं डॉ. शीतला प्रसाद उपाध्याय के द्वारा किया गया है। इसके प्रथम भाग में **श्रीललितासहस्रनाम-स्तोत्रम्** (भास्करराय के भाष्य के साथ) एवं द्वितीय भाग में **नित्याषोडशिकार्णवः** (सेतुबन्ध व्याख्या के साथ) सङ्ग्रहीत हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ४००, भाग-१ ISBN : 81-7270-109-8 २००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ४००, भाग-२ ISBN : 81-7270-170-5 ४००.००
आकार : रायल, पृ.सं. .... भाग-३ (शीघ्र प्रकाश्य)

२६. संवित्प्रकाशः

लघु-ग्र.मा. [५१]

तन्त्रशास्त्र के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रणेता विश्रुत विद्वान् श्री वामनदत्त हैं। इस ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर सम्पादन कराकर किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६० १०.००

२७. वैष्णवागमविमर्शः

म.म.गो.क.स्मृ.ग्र.मा. [१]

आगम-शास्त्र के इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ के प्रणेता आचार्य श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी जी हैं। मनीषी लेखक ने इस ग्रन्थ में वैखानसागम, पाञ्चरात्रागम एवं भागवतागम का विशद विवेचन किया है तथा ग्रन्थ के अन्त में परिशिष्ट के रूप में 'जितन्तेस्तोत्र' भी संलग्न किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १२८ १००.००

२८. भास्करी (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [७०]

शैवदर्शन के इस अप्रतिम ग्रन्थ में उत्पलदेवकृत ईश्वरप्रत्यभिज्ञा के साथ अभिनवगुप्तपाद एवं भास्कर द्वारा प्रणीत टीकाएँ भी प्रकाशित हैं। यह ग्रन्थ दो भागों में मुद्रित है तथा तीसरे भाग में अंग्रेजी में ग्रन्थ की समालोचना है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ४८० भाग-१ १५०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ४४८ भाग-२ १५०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ५७६ भाग-३ १८०.००

२९. मालिनीविजयोत्तरतन्त्रम्

योगतन्त्र-ग्र.मा. [३१] ISBN : 81-7270-047-4

तन्त्रशास्त्र के इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ का प्रकाशन डॉ. परमहंस मिश्र 'हंस' के 'नीर-क्षीर-विवेक' हिन्दी-भाषा-भाष्य के साथ उन्हीं के सम्पादकत्व में किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४६० २४०.००

३०. प्राणतोषिणी

योगतन्त्र-ग्र.मा. [२९] ISBN : 81-7270-033-4 Set

तन्त्रशास्त्र इस अपूर्व ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन पुस्तकालय की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। श्री रामतोषण भट्टाचार्य द्वारा प्रणीत इस अद्‌भुत ग्रन्थ का सम्पादन डॉ. हरिवंश कुमार पाण्डेय ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ८४८ भाग-१ ISBN : 81-7270-034-2 ४५०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. ७४६ भाग-२ ISBN : 81-7270-105-5 ४६०.००
आकार : डिमाई, पृ.सं. .... भाग-३ (यन्त्रस्थ)

३१. सौभाग्यरत्नाकरः

योगतन्त्र-ग्र.मा. [३०] ISBN : 81-7270-035-0

तन्त्रशास्त्र के इस अद्वितीय ग्रन्थ के प्रणेता श्री विद्यानन्द नाथ जी हैं। सौभाग्य-संवर्द्धन हेतु श्रीविद्या के सम्प्रदायसिद्ध सिद्धान्तों एवं पद्धतियों

को तरङ्गायित करने वाले रत्नाकर सदृश इस ग्रन्थ का सम्पादन डॉ. परमहंस मिश्र 'हंस' ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ६४० ३५०.००

३२. तारिणीपरिजातः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [९०]

तारादेवी की उपासना के इस प्रामाणिक ग्रन्थ का प्रणयन पं. श्री विद्वदुपाध्याय ने किया है। सरस्वतीभवन पुस्तकालय की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर इसका सम्पादन श्री रमानाथ झा शर्मा ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १४६ (शीघ्र प्रकाश्य)

३३. श्रीस्वच्छन्दतन्त्रम्

योगतन्त्र-ग्र.मा. [३२] ISBN : 81-7270-098-9 (Set)

इस ग्रन्थ का प्रकाशन महामाहेश्वर आचार्य श्रीक्षेमराज कृत 'उद्द्योत' एवं डॉ. परमहंस मिश्र 'हंस' के 'नीरक्षीरविवेक' नामक हिन्दी भाष्य के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४३६	भाग-१	ISBN : 81-7270-097-0	४००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ४१३	भाग-२	ISBN : 81-7270-111-X	४००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ४७२	भाग-३	ISBN : 81-7270-130-6	४५०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ५०४	भाग-४	ISBN : 81-7270-150-0	४८०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ३२०	भाग-५	ISBN : 81-7270-169-1	३५०.००

३४. गोरक्षसंहिता

स.भ.ग्र.मा. [११०] ISBN : 81-7270-147-0

तन्त्रशास्त्र के इस विशिष्ट ग्रन्थ में नाथसम्प्रदाय के तान्त्रिक महत्त्व एवं उसकी प्रक्रियाओं का ख्यापन हुआ है। इसके सम्पादक पण्डित श्री जनार्दन शास्त्री एवं प्रो. गङ्गाधर पण्डा हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ४९६ भाग-१ ४६४.००

आकार : रायल, पृ.सं. ...., भाग-२ (यन्त्रस्थ)



१०. पुराणेतिहास

१. पुराणेतिहासयोः सांख्ययोगदर्शनविमर्शः

स.भ.अ.मा. [२४]

इस ग्रन्थ के विद्वान् लेखक डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ने अपने गहन अध्ययन के निष्कर्षों को इसमें पिरोया है।

आकार : रायल, पृ. सं. २८८ ३२.८०

२. स्वप्नविमर्शः

सम्पू.ग्र.मा. [१२]

इस ग्रन्थ में स्वप्न-शास्त्र का विश्लेषण ज्यौतिष-शास्त्र, प्राच्यभारतीय मनोविश्लेषण-शास्त्र एवं भारतीय दर्शनों की दृष्टि से किया गया है। इसके लेखक श्री रामनारायण त्रिपाठी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २९६ (यन्त्रस्थ)

३. अग्निपुराणोक्तं काव्यालङ्कारशास्त्रम्

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [९]

इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'काव्यप्रभा' नामक संस्कृत-व्याख्या एवं डॉ. पारसनाथ द्विवेदी द्वारा निर्मित गम्भीर 'हिन्दी-व्याख्या' के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३८४ ५६.००

४. आयुर्वेदशास्त्रे भूतविद्यायाः संवीक्षणात्मकमध्ययनम्

स.भ.अ.मा. [३४]

इस विषय पर संस्कृत-भाषा में लिखी गयी यह प्रथम मौलिक कृति है। इसके लेखक डॉ. विद्याधर शुक्ल हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ३८४ ४५.००

५. स्टडीज इन हिन्दू ला

स.भ.अ.मा. [१]

म.म.डॉ. गङ्गानाथ झा द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन मौलिक टिप्पणियों तथा परिशिष्टों के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. २४० ६४.००

६. काशीखण्डः

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [१३]

यह ग्रन्थ श्री रामानन्दाचार्य की 'रामानन्दी' 'संस्कृत-व्याख्या' तथा पण्डित श्री नारायणपति त्रिपाठी की 'नारायणी' 'हिन्दी-व्याख्या' के साथ प्रकाशित हुआ है। इसका सम्पादन विश्रुत मनीषी विद्वान् आचार्य श्री करुणापति त्रिपाठी जी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७२० भाग-१ २००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ७६८ भाग-२ २००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ६४० भाग-३ ३००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ५२० भाग-४ २८०.००

७. कूर्ममहापुराणविषयानुक्रमकोशः

स.भ.अ.मा. [३९]

इस ग्रन्थ में कूर्म-महापुराण में आए हुए विषयों का अकारादि क्रम से संकलन तथा विश्लेषण किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७२८ १३२.००

८. पाराशरोपपुराणस्य समीक्षात्मकं सम्पादनम्

स.भ.अ.मा. [४०]

इस उपपुराण का सम्पादन अत्यन्त अनुसन्धानपूर्ण ढ़ंग से हुआ है तथा इसका प्रकाशन सरस्वतीभवन की पाण्डुलिपि के आधार पर प्रथम बार सम्पन्न हुआ है। इसके सम्पादक आचार्य श्री कपिलदेव त्रिपाठी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २४० ६६.००

९. श्रीगङ्गासहस्रनामस्तोत्रम्

लघु-ग्र.मा. [५०]

महर्षि व्यास द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री रामानन्दाचार्य द्वारा प्रणीत 'रामानन्दी' व्याख्या एवं पण्डित श्री नारायणपति त्रिपाठी द्वारा प्रणीत 'नारायणी' हिन्दी-व्याख्या के साथ किया गया है। इसका सम्पादन आचार्य श्री करुणापति त्रिपाठी जी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १२८ २०.००

१०. महाभारतसर्वस्वम्

सम्पू.ग्र.मा. [१८]

इस अपूर्व ग्रन्थ के प्रणेता विश्रुत विद्वान् पण्डित श्री कुबेरनाथ शुक्ल जी हैं। मनीषी लेखक ने इस ग्रन्थ में महाभारत के सारभूत समग्र विषयों का अनुसन्धानात्मक विश्लेषण किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८२२ ४००.००

११. काशी-माहात्म्य

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [२३]

यह ग्रन्थ प्रसिद्ध सन्त स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा प्रणीत है। काशी (वाराणसी) के पुराणप्रसिद्ध माहात्म्य के वर्णन के साथ-साथ इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ में काशी-क्षेत्र में स्थित विभिन्न शिवलिङ्गों तथा पुण्य-क्षेत्रों का वर्णन एवं काशी-क्षेत्र में कर्त्तव्याकर्त्तव्य आदि विषयों का विशद विश्लेषण किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २८० १००.००

१२. गर्गसंहिता (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [८६] ISBN : 81-7270-046-6 Set

पुराणविषयक यह संहिता-ग्रन्थ श्रीमद्भागवत का पूरक माना जाता है। इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में ६ खण्ड हैं—१. गोलोकखण्ड, २. वृन्दावनखण्ड, ३. गिरिराजखण्ड, ४. माधुर्यखण्ड, ५. मथुराखण्ड, ६. द्वारकाखण्ड।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ७१२ भाग-१ २२०.००

आकार : डिमाई, पृ.सं ८८० भाग-२ ISBN : 81-7270-045-8 ३००.००

१३. वामनमहापुराणविषयानुक्रमकोशः

स.भ.अ.मा. [४६]

इस ग्रन्थ में वामन-महापुराण में आये हुए विषयों का अकारादि क्रम से संकलन तथा विश्लेषण किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७२८, भाग-१ ५००.००

आकार : रायल, पृ.सं. ...., भाग-२ (यन्त्रस्थ)

१४. ब्रह्मवैवर्त्तमहापुराणविषयानुक्रमकोशः

स.भ.अ.मा. [४९]

इस ग्रन्थ में ब्रह्मवैवर्त्त-महापुराण में आये हुए विषयों का अकारादि क्रम से संकलन तथा विश्लेषण किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३७६ ३००.००

१५. अष्टादशपुराणेषु नारी

स.भ.अ.मा. [४७]

इस ग्रन्थ की रचयिता प्रख्यात विदुषी डॉ. लक्ष्मी देवी शर्मा अय्यर हैं।

मनीषी लेखिका ने सम्पूर्ण पौराणिक साहित्य का मन्थन करके इस अनुपम ग्रन्थ की रचना की है। इसमें भारतीय नारियों के उत्कर्ष, उत्सर्ग, वैदुष्य तथा सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में उनकी सामाजिक प्रेरणा आदि पक्षों पर विशद अनुशीलन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २१६ २००.००

१६. भगवन्नाममाहात्म्यसङ्ग्रहः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [५६]

इस ग्रन्थ के प्रणेता परमहंस परिव्राजक श्री रघुनाथेन्द्र यति हैं। मनीषी सन्त ने इस ग्रन्थ में भगवान् के दशावतारी नामों का संग्रह पूरे संस्कृत वाङ्मय से किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २४० १४०.००

१७. केदारखण्डः

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [१७] ISBN : 81-7270-049-0 Set

स्कन्दपुराण के माहेश्वरखण्ड के अन्तर्गत समाविष्ट इस केदारखण्ड का प्रकाशन प्रो. वाचस्पति द्विवेदी की 'हिन्दी-व्याख्या' के साथ किया गया है। विशद भूमिका एवं परिशिष्ट आदि के साथ इसका सम्पादन भी प्रो. द्विवेदी जी ने ही किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५६८, भाग-१ ISBN : 81-7270-048-2 ४५०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ५४४, भाग-२ ISBN : 81-7270-131-4 ५००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ५५६, भाग-३ ISBN : 81-7270-171-3 ५५०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ...., भाग-४ (यन्त्रस्थ)

१८. विष्णुस्मृति का विवेचनात्मक अध्ययन

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [३२] ISBN : 81-7270-041-5

डॉ. रञ्जना दूबे द्वारा प्रणीत इस प्रबन्ध में विष्णुस्मृति को केन्द्र में रखकर पुङ्खानुपुङ्ख भाव से अनुसन्धानात्मक विवेचन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १२८ १५०.००

१९. कल्किपुराणम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [१०३] ISBN : 81-7270-080-6

उपपुराणों में अन्यतम इस पुराण का प्रकाशन सरस्वतीभवन पुस्तकालय की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. अशोक चटर्जी शास्त्री ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २७८ २४०.००

२०. श्रीमद्भागवत में सांख्ययोग के तत्त्व : एक परिशीलन

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [३३] ISBN : 81-7270-063-7

श्रीमद्भागवत का दार्शनिक विश्लेषणपरक यह ग्रन्थ प्रो. विमला कर्नाटक द्वारा प्रणीत है। विदुषी लेखिका ने इस ग्रन्थ को दर्शन एवं इतिहास नामक दो पटलों में विभक्त कर विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४४० ४००.००

२१. शिवमहापुराणम् (सनत्कुमारसंहिता)

पुराणों में अनन्यतम इस महापुराण का प्रकाशन अत्यन्त प्राचीन एवं दुर्लभ संस्कृत-व्याख्या तथा सारगर्भित हिन्दी-व्याख्या के साथ किया जा रहा है। इसका सम्पादन प्रकाशन-निदेशक डॉ. हरिश्चन्द्र मणि त्रिपाठी ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. (यन्त्रस्थ)

२२. सिन्धुलिपि एवं भारत की अन्य लिपियाँ

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [३८] ISBN : 81-7270-088-1

सिन्धुलिपि के अनुसन्धानात्मक विशिष्ट विवेचन एवं साथ ही भारतवर्ष की अन्य लिपियों के सारगर्भित विवेचन से युक्त इस ग्रन्थ का प्रणयन डॉ. पद्माकर मिश्र ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १९८ २२०.००

२३. काशीयात्रा (द्वितीय संस्करण)

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [१६]

स्व. पण्डित श्रीनारायणपति त्रिपाठी द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में काशी की अनेकानेक यात्राओं का विशिष्ट वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ का सम्पादन आचार्य श्रीकरुणापति त्रिपाठी ने अपनी विशिष्ट भूमिका एवं परिशिष्ट के साथ किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७२ (शीघ्र प्रकाश्य)

२४. लोकमाता गङ्गा

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [३९] ISBN : 81-7270-107-1

लोकमाता गङ्गा के अलौकिक एवं ऐतिहासिक स्वरूप के परिचायक इस महनीय ग्रन्थ का प्रणयन आचार्यप्रवर श्री कुबेरनाथ शुक्ल जी ने किया है। इसमें गङ्गा जी से सम्बद्ध समग्र विषयों का साङ्गोपाङ्ग विवेचन किया गया है। इसके सम्पादक भी आचार्य शुक्ल जी ही है।

आकार : रायल, पृ.सं. २२८ २४०.००



११. साहित्यशास्त्र

१. काव्यप्रकाशः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [४६]

साहित्य-शास्त्र के इस प्राणभूत ग्रन्थ का प्रकाशन चण्डीदास की 'दीपिका' टीका के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५२० — १३२.००

२. साहित्यमीमांसा

स.भ.ग्र.मा. [११९]

महाकवि मंखक द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का सम्पादन डॉ. गौरीनाथ शास्त्री ने किया है। यह ग्रन्थ सरस्वतीभवन-पुस्तकालय की पाण्डुलिपियों के आधार पर प्रथम बार प्रकाशित हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३६० — ४४.००

३. रसिकजीवनम् (द्वितीय संस्करण)

लघु-ग्र.मा. [२७]

यह ग्रन्थ पण्डित श्री रामानन्दपति त्रिपाठी द्वारा प्रणीत है। इस ग्रन्थ का इतिहास की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है; क्योंकि इसके लेखक दाराशिकोह के गुरु रहे हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ११४ — (शीघ्र प्रकाश्य)

४. नानकचन्द्रोदयमहाकाव्यम्

स.भ.ग्र.मा. [१०५]

यह महाकाव्य गुरु नानकदेव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व तथा कृतित्व का विशद रूप से चित्रण करता है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७०० — ७४.६०

५. भावप्रकाशन : एक समालोचनात्मक अध्ययन

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [१]

इस ग्रन्थ के विद्वान् लेखक डॉ. रामरंग शर्मा ने शारदातनय के 'भावप्रकाशनम्' नामक ग्रन्थ के सभी पक्षों पर गम्भीर विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३७६ — ४५.००

६. शिवमहिम्नः स्तोत्रम् (द्वितीय संस्करण)

लघु-ग्र.मा. [४०]

पुष्पदन्ताचार्य द्वारा प्रणीत यह ग्रन्थ मधुसूदन सरस्वती की 'मधुसूदनी' व्याख्या तथा पण्डित श्री नारायणपति त्रिपाठी की 'पञ्चमुखी' व्याख्याओं के साथ प्रकाशित हुआ है। पञ्चमुखी टीका के अन्तर्गत संस्कृत-पद्यानुवाद, संस्कृत-भावानुवाद, हिन्दी-पद्यानुवाद, हिन्दी-बिम्बानुवाद और हिन्दी-व्याख्या सम्मिलित हैं। इस ग्रन्थ के अन्त में दुर्वासा ऋषिकृत 'शक्तिमहिम्नस्तोत्र' भी परिशिष्ट के रूप में सम्मिलित है।

आकार : रायल, पृ.सं. २१६ — १००.००

७. कृष्णकुतूहलम्

स.भ.ग्र.मा. [१२७]

मधुसूदन सरस्वती द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का सम्पादन पण्डित श्री हरिशंकर ओझा ने अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से किया है। यह नाट्यकृति सरस्वतीभवन पुस्तकालय की पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित हुई है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २७२ — ६०.००

८. वाल्मीकिरचनामृत

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [१३]

यह ग्रन्थ पण्डित श्री कुबेरनाथ शुक्ल द्वारा लिखा गया है। विद्वान् लेखक ने हिन्दी-भाषा में 'वाल्मीकि-रामायण' तथा 'योगवासिष्ठ' के महनीय महानायकों की लीलाओं का मार्मिक चित्रण किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३७६ भाग-१ — ५६.००
आकार : रायल, पृ.सं. २२४ भाग-२ — ६०.००
आकार : रायल, पृ.सं. २६४ भाग-३ — ९०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ३२० भाग-४ — १००.००

९. आचार्य नन्दिकेश्वर और उनका नाट्य-साहित्य

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [७]

इस ग्रन्थ के प्रणेता डॉ. पारसनाथ द्विवेदी हैं। आचार्य नन्दिकेश्वर और उनकी नाट्य-कृतियों का इस ग्रन्थ में साङ्गोपाङ्ग विवेचन हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३५६ — ७०.००

१०. इण्डेक्स टु वाल्मीकि-रामायण

स.भ.अ.मा., [४]

इस ग्रन्थ के लेखक डॉ. मन्मथनाथ राय हैं। विद्वान् लेखक ने इसमें वाल्मीकि रामायण की मिथकीय संज्ञाओं का गम्भीर विवेचन प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २६४ — ४०.००

११. नवमशताब्दीतो द्वादशशताब्दीपर्यन्तं विशिष्टसंस्कृतकाव्येषु सामाजिकव्यवस्थायाः परिशीलनम्

स.भ.अ.मा. [४३]

इस ग्रन्थ के प्रणेता डॉ. छोटेलाल त्रिपाठी हैं। लेखक ने नवम शताब्दी से लेकर द्वादश शताब्दी के बीच में निर्मित महाकाव्यों के आधार पर समाज-व्यवस्था का विश्लेषण किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १८४ — ८०.००

१२. वैदिक-संहिताओं में नारी

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [९]

इस ग्रन्थ की लेखिका डॉ. मालती शर्मा हैं। विदुषी लेखिका ने वैदिक-वाङ्मय का आलोडन करते हुए इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २८८ — ९६.००

१३. नाट्यशास्त्रम्

गङ्गानाथझा-ग्र.मा. [१४] ISBN : 81-7270-040-7 (Set)

आचार्य भरतमुनि द्वारा प्रणीत यह ग्रन्थ आचार्य अभिनवगुप्त की विख्यात 'अभिनवभारती' टीका तथा आचार्य श्री पारसनाथ द्विवेदी की मार्मिक 'हिन्दी-व्याख्या' एवं टिप्पणी के साथ प्रकाशित हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८३२, भाग-१ — २००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ७३०, भाग-२ — २००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ८००, भाग-३ ISBN : 81-7270-039-3 — २८०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ६४०, भाग-४ ISBN : 81-7270-142-X — ३००.००

१४. पण्डित-परिक्रमा (प्रथमः स्तबकः)

वि.वि.द्विशताब्दी-ग्र.मा. [१]

इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'पण्डित-पत्रिका' में सन् १८६६ ई. से

१८७१ ई. पर्यन्त प्रकाशित विशिष्ट निबन्धों के संकलन के रूप में किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. विजय नारायण मिश्र ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २०८ — १६०.००

१५. खण्डप्रशस्तिः

वि.वि.द्विशताब्दी-ग्र.मा. [२]

श्री हनुमद्विरचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'पण्डित-परिक्रमा' के द्वितीय स्तबक के रूप में श्री गुणविनय सूरि द्वारा प्रणीत 'तिलक' व्याख्या के साथ हुआ है। इसके सम्पादक डॉ. विजय नारायण मिश्र हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ८० — ८०.००

१६. पण्डित-परिक्रमा (तृतीयः स्तबकः)

वि.वि.द्विशताब्दी-ग्र.मा. [१]

इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'पण्डित-पत्रिका' में सन् १८६६ ई. से १८७१ ई. पर्यन्त प्रकाशित विशिष्ट निबन्धों के संकलन के रूप में किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. विजय नारायण मिश्र ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३४४ — १६०.००

१७. पण्डित रीविजिटेड

वि.वि.द्विशताब्दी-ग्र.मा. [३]

इस ग्रन्थ का प्रकाशन 'पण्डित-पत्रिका' में सन् १८६६ ई. से १८७६ ई. पर्यन्त प्रकाशित विशिष्ट अंग्रेजी निबन्धों के संकलन के रूप में किया गया है। इसके सम्पादक विश्रुत विद्वान् डॉ. विजय नारायण मिश्र हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २४८ — १९०.००

१८. रसमञ्जरी

स.भ.ग्र.मा. [१३४]

श्री भानुदत्त द्वारा विरचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री विश्वेश्वरकृत 'समञ्जसा' एवं श्री जनार्दन पाण्डेयकृत 'सुखावबोधा' व्याख्याओं के साथ किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २६२ — ५०.००

१९. अस्ताचलीयम्

लघु-ग्र.मा. [४८]

यह ग्रन्थ आचार्य श्री गोविन्दचन्द्र पाण्डेय द्वारा प्रणीत है। मनीषी लेखक ने इस ग्रन्थ में पाश्चात्त्य अंग्रेजी-लेखकों की कविताओं का संस्कृत-पद्यरूपान्तर किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६८ २०.००

२०. दानकेलिचिन्तामणिः

स.भ.ग्र.मा. [१३३]

अज्ञातकर्तृक इस ग्रन्थ का प्रकाशन पण्डित श्री गोपालशास्त्री 'दर्शनकेसरी' द्वारा विरचित अन्वय, भावार्थ एवं समासादि से संयुक्त 'सुबोधा' व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ११८ ४६.००

२१. पारिजातहरणचम्पूः

स.भ.ग्र.मा. [१३२]

महाकवि शेषश्रीकृष्ण द्वारा विरचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित करके किया गया है। इसका वैदुष्यपूर्ण सम्पादन पण्डित श्री द्विजेन्द्र-नाथ मिश्र 'निर्गुण' ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८८ ३२.००

२२. अलङ्कारशास्त्र में आचार्य कुन्तक की देन

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [१५]

यह ग्रन्थ डॉ. श्रीमती हेमा आत्मनाथन् द्वारा प्रणीत है। विदुषी लेखिका ने इस ग्रन्थ में आचार्य कुन्तक-सम्बन्धी समस्त गम्भीरतर पक्षों का शोधात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २४० ८०.००

२३. विगत उन्नीसवीं शताब्दी में संस्कृत-शिक्षा की स्थिति

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [१२]

यह ग्रन्थ डॉ. श्रीमती दुर्गावती उपाध्याय द्वारा प्रणीत है। विदुषी लेखिका

ने इस ग्रन्थ में उन्नीसवीं शताब्दी में भारत के विभिन्न प्रान्तों में संस्कृत-शिक्षा की स्थिति का अनुसन्धानात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३२० १००.००

२४. भरतमुनि : साहित्यशास्त्र के आदि आचार्य

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [१७]

डॉ. रमेश कुमार पाण्डेय द्वारा प्रणीत एवं सम्पादित इस ग्रन्थ में नाट्य के उपादानों एवं रस-मीमांसा की विस्तृत विवेचना हुई है। समग्र दृष्टि से यह ग्रन्थ भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' का साङ्गोपाङ्ग चित्र प्रस्तुत करता है।

आकार : रायल, पृ.सं. १४४ ९०.००

२५. रामायण ककविन्

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [२१]

जावी-लिपि में लिखित इस रामायण का प्रकाशन 'देवनागरी' लिपि में लिप्यन्तर करके डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र के 'हिन्दी-भाषानुवाद' के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७०४ ३००.००

२६. संस्कृत-शिक्षण-समीक्षण

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [१९]

इस ग्रन्थ के प्रणेता डॉ. इन्दिराचरण पाण्डेय हैं। इस ग्रन्थ में डॉ. पाण्डेय ने संस्कृत-शिक्षा की समीक्षा करते हुए शिक्षा-प्रणाली का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २५६ १००.००

२७. विश्वदृष्टि : डॉ. सम्पूर्णानन्द स्मृति-ग्रन्थ

सम्पू.ग्र.मा. [१६]

इस ग्रन्थ का प्रकाशन वेद-व्याकरण-धर्मशास्त्र-दर्शन-ज्यौतिष-इतिहास-राजनीति-साहित्य प्रभृति विषयों से सम्बद्ध निबन्धों का सङ्कलन करके तथा सम्पादित कराकर किया गया है।

आकार : क्राउन, पृ.सं. १०५४ ३५०.००

२८. डॉ. सम्पूर्णानन्द—जीवन एवं चिन्तन

सम्पू.ग्र.मा. [१७]

इस मूर्द्धन्य ग्रन्थ में डॉ. सम्पूर्णानन्द जी के जीवनचरित, उनकी कृतियों एवं विचारों का अनुसन्धानात्मक विवरण दिया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १९२ ५०.००

२९. सौन्दर्यदर्शनविमर्शः

आ.ब.ना.शु.स्मृ.ग्र.मा. [३]

सौन्दर्यशास्त्र के इस अपूर्व ग्रन्थ के प्रणेता आचार्य श्री गोविन्दचन्द्र पाण्डेय हैं। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में सौन्दर्यशास्त्र की इतिहास-परतन्त्रता, नानायुगवर्ती काव्य, शिल्प तथा संगीत आदि की भेदप्रदर्शन-पूर्वक व्यापक रूपकल्पना एवं रूपधर्मनिरूपण आदि विषयों का समालोचनात्मक विवरण प्रस्तुत किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १२२ ९०.००

३०. को वै रसः

आ.ब.ना.शु.स्मृ.ग्र.मा. [४]

यह ग्रन्थ विश्रुत मनीषी आचार्य श्री पी. रामचन्द्रुडु द्वारा प्रणीत है। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में विविध विषयों पर गम्भीर विचार किया है। जहाँ एक ओर उन्होंने वेदान्तदर्शन की 'भामती' टीका पर अपना विश्लेषण प्रस्तुत किया है, वहीं साहित्यशास्त्र के रस-विमर्श से लेकर कालिदास की पुनरुक्तियों पर बहुत रोचक शैली में विचार प्रकट किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १०४ ९०.००

३१. अत्रिनिर्वचनम्

म.म. श्री मथुरा प्रसाद दीक्षित द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में संस्कृत-विश्वकोशान्तर्गत 'अत्रि' शब्द का भारती तथा वैदिकी व्याख्याओं द्वारा विशद विवेचन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ९८ १.५०

३२. रसगङ्गाधरः

स.भ.ग्र.मा. [१३६] ISBN : 81-7270-008-3 (Set)

पण्डितराज जगन्नाथ द्वारा प्रणीत साहित्यशास्त्र के प्राणभूत इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री नागेश भट्ट द्वारा प्रणीत 'गुरुमर्मप्रकाश' नामक व्याख्या के साथ किया गया है। विवरणात्मक भूमिका के साथ इसका सम्पादन प्रो. पारसनाथ द्विवेदी ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २८० भाग-१ १८०.००

आकार : डिमाई, पृ.सं. ८९६ भाग-२ ISBN : 81-7270-007-5 ४८०.००

३३. भवभूति की काव्यभाषा का शैली(रीति)

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [२६]

साहित्यशास्त्र के इस उत्कृष्ट ग्रन्थ के प्रणेता डॉ. व्रजभूषण त्रिपाठी जी हैं। श्री त्रिपाठी जी ने इस ग्रन्थ में भवभूति की काव्यभाषा का विस्तृत एवं अनुसन्धानात्मक विवेचन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २७२ २६०.००

३४. विद्वच्चरितपञ्चकम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [२७]

श्री नारायण शास्त्री खिस्ते द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में विक्रम की १८वीं शती के अन्त तथा १९वीं शती के मध्य में भारत-प्रसिद्ध पाँच विद्वानों का चरित चक्र-पद्धति में लिखा गया है। प्रायः सभी राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, काशी के अध्यापक रहे हैं। आज भी इनकी शिष्य परम्परा व्याकरण, न्याय और साहित्यशास्त्र में चल रही है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १५८ १००.००

३५. अवेस्ता हओम यस्त एवं बेहिस्तन शिलालेखीय प्राचीन फारसी

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [२५]

डॉ. शारदा चतुर्वेदी द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में अवेस्ता लिपि का विशद एवं विवरणात्मक विवेचन किया गया है तथा प्राचीन फारसी में लिखे बेहिस्तन शिलालेख का नागरी लिपि में मूलपाठ, वाक्यानुसारी पाठ, संस्कृतच्छाया, अंग्रेजी अनुवाद आदि विषयों का अनुसन्धानात्मक संकलन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २२४ १००.००

३६. अध्यात्मरामायणम्

सम्पू.ग्र.मा. [२०]

पण्डित श्री रामानन्दाचार्य द्वारा प्रणीत इस महनीय ग्रन्थ का प्रकाशन पण्डित श्री कुबेरनाथ शुक्ल जी के विशद हिन्दी-विवेचन के साथ उन्हीं के सम्पादकत्व में सम्पन्न किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५४४ ४५०.००

३७. भारतस्य सांस्कृतिको दिग्विजयः (द्वितीय संस्करण)

सम्पू.ग्र.मा. [७]

श्री हरिदत्त वेदालङ्कार द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में प्रतिपादित किया गया है कि भारत ने विश्व के किन-किन भागों में जाकर धार्मिक एवं सांस्कृतिक विजय प्राप्त की थी और अपनी संस्कृति की छाप छोड़ी थी। इसकी सिद्धि में अनेक प्रमाण भी दिये गये हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ३७२ २८०.००

३८. मनोऽनुरञ्जननाटकम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [७६]

श्री अनन्तदेव द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में गोवर्द्धनपूजा तथा चीरहरणलीला का वर्णन है। पाँच अङ्कों का यह नाटक आपदेव के पुत्र की कृति है। इसमें भक्ति का उत्तम परिपोष किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ११४ ८०.००

३९. संस्कृतकथाकुञ्जः

सम्पू.ग्र.मा. [२१] ISBN : 81-7270-010-5

पण्डित श्री शिव जी उपाध्याय तथा डॉ. शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ में साहित्यशास्त्र के मूर्द्धन्य विद्वानों द्वारा प्रणीत उत्कृष्ट कथाओं का संग्रह किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १८४ १३०.००

४०. सिखधर्म की व्यापकता एवं नामधारी दरबार

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [३०]

सिख-साहित्य के इस महनीय ग्रन्थ के प्रणेता एवं सम्पादक डॉ. रामरङ्ग शर्मा हैं। डॉ. शर्मा ने इस ग्रन्थ में प्रधानतया नामधारी-सम्प्रदाय के समग्र इतिहास का सारांश रूप में उत्कृष्ट निरूपण किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १०६ १६०.००

४१. जपुजी साहिब

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [२८]

गुरुमुखी लिपि में प्रणीत सिख-सम्प्रदाय के इस महनीय ग्रन्थ का प्रकाशन डॉ. रामरङ्ग शर्मा के हिन्दी-अनुवाद के साथ किया गया है। डॉ. शर्मा ने हिन्दी-अनुवाद के साथ ही साथ विवरणात्मक भूमिका तथा अनुसन्धानात्मक परिशिष्टों से विभूषित कर इस ग्रन्थ का सम्पादन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १३४ १५०.००

४२. काव्यप्रकाशः

स.भ.ग्र.मा. [१४३] ISBN : 81-7270-089-4

साहित्यशास्त्र के प्राणभूत इस ग्रन्थ का प्रकाशन संस्कृत-भाषा में प्रणीत श्री गोविन्द ठाकुर की 'प्रदीप' व्याख्या तथा श्री नागोजी भट्ट की 'उद्द्योत' व्याख्या के साथ किया गया है। इसका सम्पादन साहित्यशास्त्र के मनीषी विद्वान् आचार्य श्री शिव जी उपाध्याय ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६८० ५८०.००

४३. जैमिनीयं सामगानम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [१०९] ISBN : 81-7270-042-3

आचार्य जैमिनि द्वारा प्रणीत सङ्गीतशास्त्र के इस महनीय ग्रन्थ का सम्पादन पं. श्री विभूतिभूषण भट्टाचार्य ने किया है। इस ग्रन्थ में सामगान की विविध पद्धतियों का विशद विवेचन हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४०० २००.००

४४. इण्डोनेशिया में संस्कृत

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [३६] ISBN : 81-7270-057-1

यह ग्रन्थ डॉ. जे. गोंदा द्वारा मूलतः आङ्ग्ल-भाषा में प्रणीत है। इसका हिन्दी-अनुवाद श्री अलख निरंजन पाण्डेय ने किया है। इस ग्रन्थ में इण्डोनेशिया में संस्कृत-भाषा की स्थिति, विकास आदि का अनुसन्धानात्मक दृष्टि से विशद विवेचन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७७६ ६५०.००

४५. अर्वाचीनं मनोविज्ञानम् (द्वितीय संस्करण)

सम्पू.ग्र.मा. [३] ISBN : 81-7270-026-1

मामराजदत्त कपिल द्वारा प्रणीत भारतीय दृष्टिकोण से लिखा गया मनोविज्ञानशास्त्र का यह प्रामाणिक ग्रन्थ है। विद्वान् लेखक ने आधुनिक विचारधारा को प्राचीनता के साथ समन्वित करते हुए इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५६० ४३२.००

४६. साहित्यशारीरकम्

पं.पट्टाभिरामशास्त्रिस्मृति-ग्र.मा. [१]

साहित्यशास्त्र के इस महनीय ग्रन्थ के प्रणेता प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी हैं। प्रो. द्विवेदी जी ने इस ग्रन्थ में साहित्यशास्त्र के महत्त्वपूर्ण विषयों काव्य, नाट्य आदि का अनुसन्धानात्मक विश्लेषण किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २३२ २००.००

४७. त्रिपुरदाहः

स.भ.ग्र.मा. [१३७]

महाकवि वत्सराज द्वारा प्रणीत इस डिम-ग्रन्थ में भगवान् महेश के द्वारा त्रिपुरासुर के विनाश का उत्कृष्ट निरूपण है। विषय की दृष्टि से इस ग्रन्थ के साथ श्री वेङ्कयार्य द्वारा प्रणीत 'महेन्द्रविजय' तथा श्री वेङ्कटवरदाचार्य द्वारा प्रणीत 'श्रीकृष्णविजय' नामक दो अन्य डिम-ग्रन्थ भी निबन्धित हैं। इस ग्रन्थ का सम्पादन डॉ. दशरथ द्विवेदी तथा डॉ. राजनारायण उपाध्याय ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १६८ ८०.००

४८. वर्णाश्रम शिक्षा-व्यवस्था तथा आधुनिक युग में उसकी उपयोगिता

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [३१]

डॉ. सुभाष चन्द्र तिवारी द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में वर्णाश्रम-शिक्षा-व्यवस्था का साङ्गोपाङ्ग निरूपण किया गया है। ब्रह्मवाद, ज्ञानवाद, आत्मवाद, मुक्तिवाद, सौन्दर्यवाद, भौतिकवाद, आधुनिक शिक्षा-दर्शन आदि के साथ वर्णाश्रम-शिक्षा-व्यवस्था का सुविशद विवेचन इस ग्रन्थ में किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २०८ २००.००

४९. शिवलीलार्णवः

स.भ.ग्र.मा. [१४१] ISBN : 81-7270-056-3

महाकवि श्री नीलकण्ठ दीक्षित द्वारा प्रणीत इस महाकाव्य में भगवान् शिव की चतुष्षष्टि लीलाओं का लालित्यपूर्ण वर्णन किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. ददन उपाध्याय ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ३१२ २००.००

५०. देवीस्तोत्रम्

लघु-ग्र.मा. [५७] ISBN : 81-7270-043-1

श्रीयशस्कर कवि द्वारा प्रणीत गिरिजादेवी के स्तुतिपरक इस पद्यकाव्य में श्री शोभाकर मिश्र द्वारा प्रणीत 'अलङ्काररत्नाकर' में विवेचित अलङ्कारों के उदाहरण के रूप में ही पद्यों को प्रस्तुत किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. काली प्रसाद दूबे ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४८ १२.००

५१. विशुद्धवैभवं महाकाव्यम्

लघु-ग्र.मा. [५९] ISBN : 81-7270-050-4

म.म. श्री गोपीनाथ कविराज के गुरु, महान् साधक स्वामी श्री विशुद्धानन्द परमहंस के जीवन पर आधारित इस महाकाव्य का प्रणयन पं. श्री मनुदेव भट्टाचार्य ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १६० २५.००

५२. धर्मविजयनाटकम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [३५] ISBN : 81-7270-099-7

अकबर के वेतनाध्यक्ष केशवदास की प्रेरणा से किसी कश्मीरी पण्डित द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन पुस्तकालय की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। इसका सम्पादन पं. श्री नारायण शास्त्री खिस्ते ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ८० (यन्त्रस्थ)

५३. पराम्बास्तुतिशतकम्

लघु-ग्र.मा. [६०] ISBN : 81-7270-069-5

पं. श्री विद्याधरदत्त पाण्डेय द्वारा प्रणीत देवी-स्तुति का यह महत्त्वपूर्ण लघु-ग्रन्थ अत्यन्त आकर्षक एवं प्रसादगुणयुक्त श्लोकों से अलंकृत है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५२ १६.००

५४. स्केच आफ द राइज एण्ड प्रोग्रेस आफ द बनारस पाठशाला

वि.वि.द्विशताब्दी-ग्र.मा. [९] ISBN : 81-7270-055-5

जार्ज निकोलस द्वारा प्रणीत इस महनीय ग्रन्थ में बनारस संस्कृत पाठशाला (वर्तमान-सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय) का सन् १७९१ से १९०६ ई. तक का इतिहासात्मक विशद वर्णन किया गया है। इसका सम्पादन प्रकाशन-निदेशक डॉ. हरिश्चन्द्र मणि त्रिपाठी ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १९२ ३००.००

५५. साहित्यविमर्शः

स.भ.अ.मा. [५४] ISBN : 81-7270-095-4

डॉ. रहसबिहारी द्विवेदी द्वारा प्रणीत साहित्यशास्त्र के इस अद्भुत ग्रन्थ में विविध शास्त्रीय विषयों पर लिखे गये अनुसन्धानात्मक निबन्धों को सङ्कलित एवं सम्पादित कर प्रकाशित किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४४८ ४५०.००

५६. सूक्तिमुक्तावली (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [९२]

प्रवाहयुक्त भाषा से अलंकृत इस गद्यकाव्य का प्रणयन पं. श्री गोकुलनाथोपाध्याय ने किया है। सात आख्यायिकाओं से युक्त इस काव्य का सम्पादन पं. श्री भूपनारायण झा ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १४८ (यन्त्रस्थ)

५७. श्रीमम्मटभट्टपण्डितराजजगन्नाथयोर्मतभेदविमर्शः

साहित्यशास्त्र के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रणेता पं. श्री वायुनन्दन पाण्डेय हैं। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में पण्डितराज जगन्नाथ एवं श्री मम्मट भट्ट के विविध शास्त्रीय मतभेदों का अनुसन्धानात्मक परिशीलन किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. (शीघ्र प्रकाश्य)

५८. काव्यकल्पलतावृत्तिः

स.भ.ग्र.मा. [१४४] ISBN : 81-7270-087-3

श्री अमरचन्द्र यति द्वारा प्रणीत कविशिक्षा-विषयक इस अपूर्व ग्रन्थ का प्रकाशन सरस्वतीभवन-पुस्तकालय की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के आधार पर किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. ददन उपाध्याय ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २५६ २६०.००

५९. रघुवीरचरितम्

स.भ.ग्र.मा. [१४५] ISBN : 81-7270-090-3

महाकवि मल्लिनाथ द्वारा प्रणीत साहित्यशास्त्र के इस महाकाव्य में रामचन्द्र जी के वनवास से प्रारम्भ कर राज्याभिषेक तक की कथा अत्यन्त सरस पद्यों द्वारा सत्रह सर्गों में वर्णित है। इसका सम्पादन डॉ. मञ्जू उपाध्याय ने किया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २५६ २००.००

६०. पण्डितराज जगन्नाथ शैमुषी समुन्मीलन

वि.वि.र.ज.ग्र. [४०] ISBN : 81-7270-119-5

डॉ. मनुलता शर्मा द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में पण्डितराज जगन्नाथ के समग्र काव्य-ग्रन्थों का अनुसन्धानात्मक अनुशीलन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७०८ ६८०.००

६१. वाराणसीस्थसंस्कृतकवीनां समीक्षात्मकमध्ययनम्

स.भ.अ.मा. [५३] ISBN : 81-7270-089-X

डॉ. राजेन्द्र प्रताप त्रिपाठी 'रजोला जी' द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में सन् १९०१ से १९२० तक के वाराणसीस्थ संस्कृत कवियों के विषय में अनुसन्धानात्मक विशद विवेचन किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २०० २३०.००

६२. समीक्षासौरभम्

स.भ.अ.मा. [५५] ISBN : 81-7270-103-9

प्रो. राजेन्द्र मिश्र द्वारा प्रणीत समीक्षात्मक एवं अनुसन्धानात्मक निबन्धों को सङ्कलित कर इस महनीय ग्रन्थ को प्रकाशित किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३०४ ३००.००

६३. चित्रचम्पूकाव्यस्य ससमीक्षं सम्पादनम्

स.भ.अ.मा. [५६] ISBN : 81-7270-108-X

आचार्य श्री बाणेश्वर भट्टाचार्य द्वारा प्रणीत चित्रचम्पूकाव्य का समीक्षात्मक सम्पादन डॉ. देवी प्रसाद द्विवेदी ने किया है। उन्हीं के सम्पादकत्व में इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. १९२ २४०.००

६४. रसचन्द्रिका

लघु-ग्र.मा. [६३] ISBN : 81-7270-094-6

साहित्य-शास्त्र का यह अनुपम ग्रन्थ श्रीविश्वेश्वर पाण्डेय द्वारा प्रणीत है। इसमें काव्य के आत्मस्वरूप रस का साङ्गोपाङ्ग विवरण प्रस्तुत है। इसके सम्पादक डॉ. हरिवंश कुमार पाण्डेय हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. १०८ २४.००

६५. सीतारावणसंवादझरी

लघु-ग्र.मा. [६४] ISBN : 81-7270-104-7

चामराज नगरराम शास्त्री द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ का प्रकाशन स्वोपज्ञ संस्कृत-व्याख्या एवं डॉ. बृजेशमणि पाण्डेय द्वारा प्रणीत हिन्दी-व्याख्या के साथ किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. राजाराम शुक्ल हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. १३० २४.००

६६. मृगाङ्कदूतम्

बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते ग्र.मा. [१] ISBN : 81-7270-114-4

प्रो. राजेन्द्र मिश्र द्वारा रचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन हिन्दी-पद्यानुवाद एवं आंग्लभाषानुवाद के साथ किया गया है। इसके सम्पादक भी प्रो. मिश्र ही हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ८४ १००.००

६७. मृगाङ्कलेखा नाटिका (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [२६] ISBN : 81-7270-116-0

श्री विश्वनाथ देव रचित इस ग्रन्थ में कर्पूरतिलक कामरूपेश्वर की कन्या विलासवती के प्रेम-विवाह की कथा है। रत्नावली, मालविकाग्निमित्र आदि नाटकों के आधार पर इसका संविधानक तैयार किया गया है। इसके सम्पादक पण्डित श्री नारायण शास्त्री खिस्ते हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ८० ८०.००

६८. संस्कृतकाव्यशास्त्रे तृतीयशब्दशक्तिविमर्शः

स.भ.अ.मा. [५८] ISBN : 81-7270-119-5

डॉ. शोभा मिश्र द्वारा विरचित पाँच अध्याय वाले इस महनीय ग्रन्थ में काव्यशास्त्र की शब्दशक्तियों पर गवेषणात्मक विचार प्रस्तुत किया गया है। इसकी सम्पादिका भी डॉ. शोभा मिश्र ही हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २४० २६०.००

६९. कुमारसम्भवमहाकाव्यम्

स.भ.ग्र.मा. [१४८] ISBN : 81-7270-124-1

महाकवि कालिदास द्वारा प्रणीत इस महाकाव्य का प्रकाशन श्री अरुणगिरिनाथ कृत 'प्रकाशिका' एवं पण्डित श्रीनारायण कृत 'विवरण' संस्कृत-व्याख्या के साथ किया गया है। इसके सम्पादक प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ६४८ ६००.००

७०. भट्टिकाव्यम्

स.भ.ग्र.मा. [१४७] ISBN : 81-7270-122-5 (Set)

महाकवि भट्टि विरचित इस महाकाव्य का प्रकाशन श्री जयमङ्गल

कृत 'जयमङ्गला' एवं श्री मल्लिनाथ कृत 'सर्वपथीना' संस्कृत-व्याख्या के साथ किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. बाँकेलाल मिश्र हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ५५२, भाग-१ ISBN : 81-7270-123-3 ५००.००
आकार : रायल, पृ.सं. ३६०, भाग-२ ISBN : 81-7270-126-8 ३५०.००

७१. सारस्वती-सुषमा-वैभवसमुन्मीलनम्

विश्वप्रसिद्ध अनुसन्धान-पत्रिका सारस्वती-सुषमा के प्रथम अङ्क से लेकर छप्पनवें अङ्क तक प्रकाशित निबन्धों एवं लघु-ग्रन्थों का अकारादि-क्रम से विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसके प्रधान सम्पादक डॉ. हरिश्चन्द्र मणि त्रिपाठी हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १४४ ५०.००

७२. साहित्यसारम्

स.भ.ग्र.मा. [१५०] ISBN : 81-7270-132-2

श्री अच्युत राय द्वारा विरचित काव्यशास्त्र के प्रकरण ग्रन्थ को स्वोपज्ञ सरसामोदव्याख्या के साथ प्रकाशित किया गया है। बारह रत्नों में साहित्यशास्त्र के समग्र विषयों का सारसङ्ग्रह प्रस्तुत किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. ददन उपाध्याय है।

आकार : रायल, पृ.सं. ८७२ ७५०.००

७३. चर्चरी

आ. बटुकनाथशास्त्रिखिस्ते ग्र.मा. [२] ISBN : 81-7270-132-2

त्रिवेणीकवि अभिराज राजेन्द्र मिश्र के विविध विषयक अभिनव काव्यों को सङ्कलित कर यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १८४ १५०.००

७४. इन्द्रोपाख्यान का उद्भव एवं विकास

वि.वि.र.त.ग्र.मा. [४१] ISBN : 81-7270-136-5

एकमात्र इन्द्र को केन्द्र में रखकर डॉ. इन्दुप्रकाश मिश्र द्वारा प्रणीत इस ग्रन्थ में वैदिक, पौराणिक तथा आभिजात्य वाङ्मय में उपलब्ध इन्द्र-सन्दर्भों की समीक्षा की गयी है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३२० ३५०.००

७५. सप्तधारा

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [४२] ISBN : 81-7270-143-8

यह ग्रन्थ प्रो. राजेन्द्र मिश्र द्वारा प्रणीत सात धाराओं में विभक्त प्राच्य-विद्या के शोध-निबन्धों को संकलित कर प्रकाशित किया गया है। ये सात धाराएँ हैं—वेद-वेदाङ्ग, पुराणेतिहास, धर्मदर्शन-संस्कृति, साहित्य तथा साहित्यशास्त्र, सुवर्णद्वीप (जावा-बाली), अर्वाचीन संस्कृत एवं प्रकीर्ण।

आकार : रायल, पृ.सं. ८२४ ८००.००

७६. अभिनवशुकसारिका

आचार्य बटुकनाथशास्त्रिखिस्ते ग्र.मा. [४]

शुकसप्तति की शैली में प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा प्रणीत इस अभिनव काव्य का प्रकाशन किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १६८ ISBN : 81-7270-140-3 १५०.००

७७. अमरज्योति

आचार्य बटुकनाथशास्त्रिखिस्ते ग्र.मा. [३]

पण्डित श्री महादेव उपाध्याय द्वारा प्रणीत इस खण्ड काव्य में भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के जीवन परिचय को प्रख्यापित किया गया है। इसके सम्पादक प्रो. राजेश्वर उपाध्याय हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ९६ ISBN : 81-7270-139-X १००.००

७८. अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्

आ.ब.ना.शा.खि.ग्र.मा. [५] ISBN : 81-7270-159-4

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा प्रणीत्न यह ग्रन्थ आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अभिनव काव्यशास्त्र है। अभिनव मापदण्डों की खोज में यह ग्रन्थ सहायक सिद्ध होगा।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १६८ १५०.००

७९. भारतीय मनीषा

वि.वि.र.ज.ग्र.मा. [४३] ISBN : 81-7270-162-4

प्रो. आद्याप्रसाद मिश्र द्वारा प्रणीत यह ग्रन्थ भारतीय संस्कृति के प्रमुख बिन्दुओं एवं प्रधान पार्श्वों को व्याख्यायित करने वाले शोध-निबन्धों को सङ्कलित कर प्रकाशित किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. २२४ २००.००

८०. अन्तर्ध्वनिः

सम्पूर्णा.ग्र.मा. [१५०] ISBN : 81-7270-148-9

प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी द्वारा प्रणीत अभिनव संस्कृत कथाओं को सङ्कलित कर इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया गया है। इसके सम्पादक भी प्रो. द्विवेदी ही हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १२० १२०.००

८१. श्रीगीतगोविन्दम्

ग.झा.ग्र.मा. [२६] ISBN : 81-7270-172-1

महाकवि जयदेव विरचित इस ग्रन्थ का प्रकाशन संस्कृत व्याख्या तथा प्रो. विद्यानिवास मिश्र कृत हिन्दी व्याख्या के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३४४ ३२०.००

८२. शत्रुशल्यचरितमहाकाव्यम्

श्री विश्वनाथ विरचित यह महाकाव्य शत्रुशल्यचरितप्रकाशिका संस्कृत व्याख्या के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। इसके सम्पादक डॉ. राजेन्द्र प्रताप त्रिपाठी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. .... (शीघ्र प्रकाश्य)

८३. श्रीरामविजयमहाकाव्यम् (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [३९] ISBN : 81-7270-173-X

श्री रूपनाथ उपाध्याय प्रणीत इस महाकाव्य में राजा दशरथ के मुनिशाप से प्रारम्भ कर रावण-वध के अनन्तर राजसिंहासनारोहण तक की कथा वर्णित है। इसके सम्पादक श्री नारायण शास्त्री खिस्ते जी हैं।

आकार : डिमाई, पृ.सं. १३२ १२०.००



१२. परिसंवाद-ग्रन्थमाला

इस विश्वविद्यालय में समय-समय पर जो अखिल भारतीय परिसंवाद-गोष्ठियाँ आयोजित होती रहती हैं और उनमें जो वैदुष्यपूर्ण निबन्ध विद्वानों के द्वारा पढ़े जाते हैं, उन्हीं निबन्धों को सम्पादित करके 'परिसंवाद-ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत प्रकाशित कराया जाता है। अब तक इस ग्रन्थमाला के नौ भाग प्रकाशित हो चुके हैं, जिसमें पहला भाग अनुपलब्ध है।

१. भारतीय चिन्तन की परम्परा में नवीन सम्भावनाएँ [प्रथम भाग]

परिसंवाद ग्र.मा. [२]

इस परिसंवाद में दो संगोष्ठियों का विवरण संग्रहीत कर प्रकाशित किया गया है। इस प्रथम भाग में प्रथम सङ्गोष्ठी के रूप में 'व्यष्टि-समष्टि की समस्या' का विवेचन है। इसके सम्पादक प्रो. राधेश्यामधर त्रिपाठी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ३८४ — २३.००

२. भारतीय चिन्तन की परम्परा में नवीन सम्भावनाएँ [द्वितीय भाग]

परिसंवाद-ग्र.मा. [३]

दर्शनसंकाय की गोष्ठियों के विवरण को सङ्कलित कर इसे प्रकाशित किया गया है। इसमें आधुनिक एवं परम्परावादी चिन्तकों से आधुनिक सन्दर्भ के प्रश्नों को उठाकर समाहित करने का प्रयत्न किया गया है। इसके सम्पादक श्री राधेश्यामधर त्रिपाठी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ३५६ — ४६.००

३. जैनविद्या एवं प्राकृत

परि.ग्र.मा. [४]

यह ग्रन्थ मार्च, १९८१ में प्राकृत एवं जैनागम विभाग द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के आर्थिक सहयोग से आयोजित संगोष्ठी में पढ़े गये विशिष्ट लेखों को सङ्ग्रह कर प्रकाशित किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. गोकुलचन्द्र जैन हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ३५२ — ५०.००

४. बौद्ध धर्म-दर्शन एवं धर्मनिरपेक्षता

परि.ग्र.मा. [५]

यह ग्रन्थ मार्च, १९८६ में बौद्धदर्शन विभाग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठी में पढ़े गये विशिष्ट निबन्धों को सङ्ग्रह कर प्रकाशित किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. रमेश कुमार द्विवेदी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २९६ — १६०.००

५. बौद्धदर्शन और मार्क्सवाद

परि.ग्र.मा. [६]

यह ग्रन्थ श्रमणविद्या संकाय द्वारा वर्ष १९८५ में आयोजित अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठी में पढ़े गये विशिष्ट निबन्धों को सङ्ग्रह कर प्रकाशित किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. रमेश कुमार द्विवेदी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ४२० — ३६०.००

६. पुराणप्रज्ञा

परि.ग्र.मा. [७]

यह ग्रन्थ १९९९ में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहयोग से पुराणेतिहास एवं सामाजिक विज्ञान विभाग द्वारा आचार्य बलदेव उपाध्याय जन्म शताब्दी समारोह के अवसर आयोजित अखिल भारतीय सङ्गोष्ठी में पढ़े गये विशिष्ट निबन्धों को संग्रह कर प्रकाशित किया गया है। इसके सम्पादक प्रो. गङ्गाधर पण्डा हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. २७२ — २५०.००

७. पुनश्चर्या-संवाद

परि.ग्र.मा. [८]

सामाजिक विज्ञान विभाग द्वारा १९९९ में आयोजित पुनश्चर्या-पाठ्यक्रम में मनीषी विद्वानों द्वारा पढ़े गये निबन्धों को सङ्ग्रह कर यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. सोमनाथ त्रिपाठी हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ३४० — २३०.००

८. पुराणप्रज्ञा (द्वितीयोऽङ्कः)

परि.ग्र.मा. [९]

पुराणेतिहास विभाग द्वारा २००१ई. में आयोजित अखिल भारतीय सङ्गोष्ठी में पढ़े गये विशिष्ट निबन्धों का सङ्ग्रह कर इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है। इसके सम्पादक प्रो. गङ्गाधर पण्डा हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. १७६ — २००.००

९. द्वैताद्वैतविमर्शः

परि.ग्र.मा. [१०]

ISBN : 81-7270-128-4

अनुसन्धान संस्थान द्वारा वर्ष २००१ में आयोजित दस दिवसीय द्वैताद्वैतविमर्श कार्यशाला में विमृष्ट विशिष्ट शोध-निबन्धों को सङ्कलित कर इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. राजाराम शुक्ल हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. १६० १८०.००

१०. मिथ्यात्वहेतूपपत्तिः

परि.ग्र.मा. [११]

ISBN : 81-7270-149-7

अनुसन्धान संस्थान द्वारा वर्ष २००४ में आयोजित दस दिवसीय द्वितीय कार्याशाला में विमृष्ट विशिष्ट शोध-निबन्धों को सङ्कलित कर यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है। इसके सम्पादक डॉ. राजाराम शुक्ल हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. १४४ १२४.००



१३. हस्तलिखित ग्रन्थों की विवरणात्मिका सूची

१. विवरणपञ्जिका (प्रथम-खण्ड, भाग-१)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत वेद और उपनिषद् के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ४०६ — २३०.००

२. विवरणपञ्जिका (प्रथम-खण्ड, भाग-२)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत वेद एवं उपनिषद् के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। इस भाग के अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. २५८ — १६०.००

३. विवरणपञ्जिका (प्रथम-खण्ड, भाग-३)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत वेद-शास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३६० — ५६.००

४. विवरणपञ्जिका (प्रथम-खण्ड, भाग-४)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत वेद-शास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। इस भाग के अन्त में अकारादि-क्रम से तृतीय एवं चतुर्थ भाग के ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३५६ — ५४.००

५. विवरणपञ्जिका (द्वितीय-खण्ड, भाग-१)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत कर्मकाण्ड के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३०६ — २००.००

६. विवरणपञ्जिका (द्वितीय-खण्ड, भाग-२)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **कर्मकाण्ड** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि क्रम से प्रथम एवं द्वितीय भाग के ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. २२० — १५०.००

७. विवरणपञ्जिका (द्वितीय-खण्ड, भाग-३)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **कर्मकाण्ड** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३८४ — ६०.००

८. विवरणपञ्जिका (द्वितीय-खण्ड, भाग-४)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **कर्मकाण्ड** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। इस भाग के अन्त में अकारादि-क्रम से तृतीय एवं चतुर्थ भाग के ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ४०० — ७०.००

९. विवरणपञ्जिका (तृतीय-खण्ड, भाग-१, द्वितीय संस्करण)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **धर्मशास्त्र** के ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि क्रम से ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. २५६ — (यन्त्रस्थ)

१०. विवरणपञ्जिका (तृतीय-खण्ड, भाग-२)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **धर्मशास्त्र** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३२० — ६०.००

११. विवरणपञ्जिका (चतुर्थ-खण्ड, भाग-१)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **पुराणेतिहास** और **गीता** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३२६ — ६.२५

१२. विवरणपञ्जिका (चतुर्थ-खण्ड, भाग-२)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत पुराणेतिहास और गीता के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ४७२ ७०.००

१३. विवरणपञ्जिका (पञ्चम-खण्ड, भाग-१)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत स्तोत्रों के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३२० ७.२५

१४. विवरणपञ्जिका (पञ्चम-खण्ड, भाग-२)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत स्तोत्रों के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। ग्रन्थ के अन्त में अकारादि-क्रम से प्रथम एवं द्वितीय भाग की ग्रन्थसूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३१८ ७.२५

१५. विवरणपञ्जिका (पञ्चम-खण्ड, भाग-३)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत स्तोत्रों के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ४८८ ७२.००

१६. विवरणपञ्जिका (पञ्चम-खण्ड, भाग-४)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत स्तोत्रों के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। इस भाग के अन्त में अकारादि-क्रम से तृतीय एवं चतुर्थ भाग के ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३९२ ७२.००

१७. विवरणपञ्जिका (षष्ठ-खण्ड, भाग-१)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत तन्त्रशास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. २९८ १८०.००

१८. विवरणपञ्जिका (षष्ठ-खण्ड, भाग-२)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **तन्त्रशास्त्र** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३५२ — ५०.००

१९. विवरणपञ्जिका (षष्ठ-खण्ड, भाग-३)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **तन्त्रशास्त्र** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। इस भाग के अन्त में अकारादि-क्रम से द्वितीय एवं तृतीय भाग के ग्रन्थों की सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३४४ — ६४.००

२०. विवरणपञ्जिका (सप्तम-खण्ड, भाग-१)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **सांख्य-योग, पूर्वमीमांसा** तथा **वेदान्तदर्शन** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३६६ — ७.००

२१. विवरणपञ्जिका (सप्तम-खण्ड, भाग-२)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **मीमांसादर्शन** एवं **वेदान्तदर्शन** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. २६४ — ५०.००

२२. विवरणपञ्जिका (अष्टम-खण्ड, भाग-१)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **न्याय-वैशेषिक-दर्शन** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ४२६ — ८.५०

२३. विवरणपञ्जिका (अष्टम-खण्ड, भाग-२)

इस भाग में **सरस्वतीभवन** में संगृहीत **न्याय-वैशेषिक-दर्शन** के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३७२ — २२४.००

२४. विवरणपञ्जिका (नवम-खण्ड, भाग-१)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत ज्यौतिषशास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३७४ ७.५०

२५. विवरणपञ्जिका (नवम-खण्ड, भाग-२)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत ज्यौतिषशास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ४०० ६६.००

२६. विवरणपञ्जिका (दशम-खण्ड)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत व्याकरणशास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. २६० ६.००

२७. विवरणपञ्जिका (एकादश-खण्ड, भाग-१)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत साहित्यशास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३९४ ८.५०

२८. विवरणपञ्जिका (एकादश-खण्ड, भाग-२)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत साहित्यशास्त्र के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थ-सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३२४ २००.००

२९. विवरणपञ्जिका (द्वादश-खण्ड, भाग-१)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत जैनदर्शन, भक्तिसम्प्रदाय, आयुर्वेद, कामशास्त्र, शिल्पशास्त्र, सङ्गीत, नीतिशास्त्र, धनुर्वेद, पञ्जी, प्रशस्ति, चित्र तथा देशीभाषाओं के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में ग्रन्थों की अकारादि-क्रम से सूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३३४ ८.००

३०. विवरणपञ्जिका (द्वादश-खण्ड, भाग-२)

इस भाग में सरस्वतीभवन में संगृहीत जैनदर्शन, भक्ति-सम्प्रदाय, आयुर्वेद, कामशास्त्र, शिल्पशास्त्र, सङ्गीत, नीतिशास्त्र, धनुर्वेद, पञ्जी, प्रशस्ति, चित्र तथा देशीभाषाओं के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है। अन्त में अकारादि-क्रम से ग्रन्थसूची भी संलग्न है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ३६८ २००.००

३१. विवरणपञ्जिका (त्रयोदश-खण्ड)

इस खण्ड में सरस्वतीभवन में संगृहीत वेद, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहास आदि के हस्तलिखित ग्रन्थों का परिचयात्मक विवरण है।

आकार : सुपर रायल, पृ.सं. ६२४ ७६.००



१४. सारस्वती सुषमा

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की त्रैमासिक अनुसन्धान-पत्रिका का प्रकाशन सन् १९४२ ई. से निरन्तर होता आ रहा है। इस पत्रिका का प्रकाशनारम्भ 'राजकीय संस्कृत कालेज' के समय में ही हुआ था। तभी से यह अनुसन्धान-पत्रिका अविच्छिन्न रूप से अपनी सारस्वत उपलब्धियों के माध्यम से संस्कृत-जगत् को अभिनव दृष्टि प्रदान करती आ रही है। इस गवेषणाप्रधान पत्रिका में संस्कृत-वाङ्मय की सभी शाखाओं से सम्बद्ध पाण्डित्यपूर्ण मौलिक निबन्धों का प्रकाशन होता है।

इस पत्रिका में अनुसन्धान-निबन्धों का तो प्रकाशन होता ही है, साथ ही इस विश्वविद्यालय के विश्वविख्यात 'सरस्वतीभवन-पुस्तकालय' में सुरक्षित विभिन्न विषयों की लघु-पाण्डुलिपियों को 'लघु-ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। निःसन्देह वे लघु-ग्रन्थ 'सारस्वती सुषमा' के माध्यम से संस्कृत-प्रेमियों के लिए बहुमूल्य उपहार हैं। इस अनुसन्धान-पत्रिका का प्रचार-प्रसार भारतवर्ष में तो है ही, विदेशों में भी इसके पाठकों की संख्या पर्याप्त है।

इस पत्रिका के प्रथम अङ्क से लेकर अद्यावधि प्रकाशित प्रायः सभी अङ्क उपलब्ध हैं। 'सारस्वती सुषमा' का वार्षिक चन्दा रू.१००.०० 'सौ रूपये' है और इसका प्रकाशन वर्ष में चार बार ज्येष्ठ, भाद्रपद, मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन-पूर्णिमा को होता है।

इस विश्वविद्यालय में विशेष अवसरों पर विशिष्ट व्याख्यान-मालाएँ आयोजित होती रहती हैं। व्याख्यान के रूप में पठित तत्तत्-शास्त्रों से सम्बद्ध निबन्धों को भी 'सारस्वती सुषमा' के विशेषाङ्क के रूप में प्रकाशित किया जाता है। अधोलिखित विशेषाङ्क अपने आप में तत्तत्-शास्त्रों के सार-संक्षेप हैं तथा सङ्ग्रहणीय हैं—

१. दर्शनविशेषाङ्कः

इस अङ्क में सभी आस्तिक दर्शनों पर तत्तत् दर्शनों के अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखे गये गवेषणाप्रधान निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। यह विशिष्टाङ्क 'सारस्वती सुषमा' के ग्यारहवें वर्ष के ३-४ अङ्कों के रूप में प्रकाशित है।

आकार : रायल, पृ.सं. २७२ ३०.००

२. व्याकरणदर्शनविशेषाङ्कः

इस विशेषाङ्क में व्याकरण-शास्त्र के विविध पक्षों पर निष्णात विद्वानों द्वारा लिखित शास्त्रचिन्तनपूर्ण निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के तेरहवें वर्ष के १-४ अङ्कों के रूप में हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३२६ — ६०.००

३. बौद्ध-जैन-दर्शनविशेषाङ्कः

इस विशेषाङ्क में बौद्ध-जैन तथा शाक्त-दर्शनों पर ख्यातिलब्ध विद्वानों द्वारा लिखित गवेषणापूर्ण निबन्ध प्रकाशित हुए हैं। इस विशिष्टाङ्क का प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के चौदहवें वर्ष के चतुर्थ अङ्क के रूप में हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. १२८ — १५.००

४. दर्शनविशेषाङ्कः

इस विशेषाङ्क में भी विभिन्न भारतीय-दर्शनों के उद्भव एवं विकास तथा उनकी वैचारिक उपलब्धियों पर तत्तत्-शास्त्रों के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा लिखे गये अनुसन्धानपूर्ण निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। यह विशिष्टाङ्क 'सारस्वती सुषमा' के पन्द्रहवें वर्ष के १-४ अङ्कों के रूप में प्रकाशित हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३७८ — ६०.००

५. दर्शनविशेषाङ्कः

इस विशेषाङ्क में भी समस्त आस्तिक दर्शनों पर लिखे गये पाण्डित्य-पूर्ण निबन्धों का सङ्ग्रह है। इसमें कुछ निबन्ध पाश्चात्त्य-पौरस्त्य दर्शनों पर तुलनात्मक दृष्टि से भी लिखे गये हैं। इस विशेषाङ्क का प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के सत्रहवें वर्ष के १-४ अङ्कों के रूप में हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४३६ — ६०.००

६. तन्त्रशास्त्रविशेषाङ्कः (द्वितीय संस्करण)

इस विशेषाङ्क में तन्त्रवाङ्मय के अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखे गये निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के बीसवें वर्ष के प्रथमाङ्क के रूप में हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३०२ — (यन्त्रस्थ)

७. पुराणविशेषाङ्कः

इस विशिष्टाङ्क में पुराण-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा लिखे गये अनुसन्धानपूर्ण निबन्धों का सङ्ग्रह है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के बीसवें वर्ष के ३-४ अङ्कों के रूप में हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. १७२ ३०.००

८. वेदान्तदर्शनविशेषाङ्कः

इस विशेषाङ्क में वेदान्तदर्शन के सभी सम्प्रदायों की दार्शनिक विवेचना से सम्बद्ध अनुसन्धानपूर्ण निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। विशेषाङ्क सङ्ग्रहणीय है। इसका प्रकाशन 'सारस्वती सुषमा' के इक्कीसवें वर्ष के ३-४ अङ्कों के रूप में हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. १३८ ३०.००

९. रजतजयन्तीविशेषाङ्कः

'सारस्वती सुषमा' का छब्बीसवें वर्ष का ३-४ अङ्क 'रजतजयन्ती-विशिष्टाङ्क' के रूप में प्रकाशित हुआ है। इस अङ्क में प्रकाशित सभी निबन्ध पाण्डित्यपूर्ण हैं। इस विशेषाङ्क की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि 'सारस्वती सुषमा' में प्रथम वर्ष से लेकर पन्द्रहवें वर्ष तक प्रकाशित निबन्धों तथा उनके लेखकों की सूची परिशिष्टरूप में प्रकाशित की गयी है।

आकार : सयल, पृ.सं. २२० ३०.००

१०. विश्वसंस्कृतसम्मेलनविशेषाङ्कः

'सारस्वती सुषमा' के छत्तीसवें वर्ष के १-४ अङ्कों का प्रकाशन 'विश्वसंस्कृतसम्मेलनविशेषाङ्क' के रूप में हुआ है। इस विशेषाङ्क में संस्कृत-जगत् की महान् विभूतियों के निबन्ध तो प्रकाशित हुए ही हैं, साथ ही 'व्याकरणदर्शनभूमिका' नामक ग्रन्थ के प्रकाशन से यह विशेषाङ्क संस्कृत-समाज में सदा आदरपूर्वक स्मरण किया जायगा।

आकार : रायल, पृ.सं. २५८ ६०.००

११. विश्वविद्यालयरजतजयन्तीविशेषाङ्कः

'सारस्वती सुषमा' के सैंतीसवे वर्ष के १-४ अङ्कों को 'विश्वविद्यालय-रजतजयन्तीविशेषाङ्क' के रूप में दो भागों में प्रकाशित किया गया है। विविध शास्त्रों पर विशिष्ट निबन्धों के साथ प्रथम-भाग में 'अभावविमर्शः' एवं द्वितीय-भाग में 'शिवमहिम्नस्तोत्रम्' नामक लघुग्रन्थों के प्रकाशन से यह विशेषाङ्क अत्यधिक सङ्ग्रहणीय हो गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २६६ भाग-१ ६०.००
आकार : रायल, पृ.सं. ३४० भाग-२ ६०.००

१२. म.म. गोपीनाथकविराजविशेषाङ्कः

'सारस्वती सुषमा' के उन्तालीसवें वर्ष के १-४ अङ्कों का प्रकाशन 'म.म. गोपीनाथकविराजविशेषाङ्क' के रूप में हुआ है। इस विशेषाङ्क में कविराज जी के व्यक्तित्व के बारे में राष्ट्रीय स्तर के विख्यात विद्वानों के निबन्ध प्रकाशित हुए हैं। यह विशेषाङ्क तन्त्रशास्त्र के साधक मनीषी कविराज जी की जन्मशताब्दी के अवसर पर प्रकाशित हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ३२८ ६०.००

१३. श्रीशङ्कराचार्यविशेषाङ्कः

'सारस्वती सुषमा' के इकतालीसवें वर्ष के १-४ अङ्कों का प्रकाशन 'श्री शङ्कराचार्यविशेषाङ्क' के रूप में हुआ है। यह विशेषाङ्क श्रीशङ्करभगवत्पाद की द्वादश-शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित किया गया है। इस विशेषाङ्क में श्री शङ्कर-भगवत्पाद के सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व का साङ्गोपाङ्ग विवेचन हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. २८७ ३०.००

१४. स्वर्णजयन्तीविशेषाङ्कः

'सारस्वती सुषमा' के इक्यावनवें वर्ष के १-४ अङ्कों का प्रकाशन 'स्वर्णजयन्ती-विशेषाङ्क' के रूप में हुआ है। यह विशेषाङ्क संस्कृत-वर्ष (१९९९-२०००, युगाब्द-५१०१) के अवसर पर प्रकाशित किया गया है। इस विशेषाङ्क में वेद, तन्त्रशास्त्र, व्याकरणशास्त्र,

ज्योतिष-शास्त्र, दर्शन-शास्त्र, साहित्यशास्त्र प्रभृति विविध शास्त्रों के ख्यातिलब्ध विद्वानों द्वारा लिखित गवेषणापूर्ण निबन्ध प्रकाशित हुए हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ८२२ १००.००

१५. पण्डितराजश्रीराजेश्वरशास्त्रिद्रविडस्मृतिविशेषाङ्कः

'सारस्वती सुषमा' के पचपनवें वर्ष के १-४ अङ्कों का प्रकाशन विशेषाङ्क के रूप में हुआ है। इसमें पण्डितराज श्री राजेश्वर शास्त्री द्रविड के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को ख्यापित करने वाले निबन्धों के साथ-साथ वेद, वेदाङ्ग आदि विविध शास्त्रों के गवेषणापूर्ण निबन्धों को प्रकाशित किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ५०० १००.००



१९. संकाय-पत्रिका

१. सङ्कायपत्रिका

इस विश्वविद्यालय के संकायों की उपलब्धियों को अभिव्यक्त करती है। इस पत्रिका का श्रीगणेश १९८४ में हुआ था। इसमें विभिन्न संकायों में होने वाली शास्त्रीय संगोष्ठियों में पढ़े गये तथा उन पर हुए विमर्शों को सम्पादित करके प्रकाशित किया जाता है, साथ ही तत्तत्संकायों के विद्वानों के द्वारा सम्पादित हस्तलिखित लघु-पाण्डुलिपियों का भी प्रकाशन किया जाता है। अब तक **'संकाय-पत्रिका'** के तीन भाग प्रकाशित हो चुके हैं।

आकार : रायल, पृ.सं.४०० भाग-१	३२.००
आकार : रायल, पृ.सं.२५२ भाग-२	४५.००
आकार : रायल, पृ.सं. ४४८ भाग-३	२८०.००

श्रमणविद्या

संकाय पत्रिका (चतुर्थ भाग) श्रमणविद्या संकाय द्वारा प्रस्तुत चौदह शोध-निबन्धों, पालि के आठ लघु ग्रन्थों तथा प्राकृत के एक लघु ग्रन्थ को संकलित कर प्रकाशित की गयी है। इसके सम्पादक **प्रो. ब्रह्मदेव नारायण शर्मा** हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. ५४४	२६४.००



१६. प्राकृत तथा जैनदर्शन

१. परमागमसारो

प्रा.जै.वि.ग्र.मा. [१]

यह ग्रन्थ आचार्य श्रुतमुनि द्वारा प्रणीत है। इसका प्रणयन पद्यबद्ध-रूप में प्राकृत-भाषा में हुआ है। यह जैनदर्शन का 'सिद्धान्त'-ग्रन्थ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४७ ४.५०

२. कसायपाहुडसुत्तं

प्रा.जै.वि.ग्र.मा. [३]

इस ग्रन्थ के प्रणेता आचार्य गुणधर हैं। इसका प्रणयन भी प्राकृत-भाषा में पद्यबद्ध-रूप में हुआ है और यह जैनदर्शन का 'सिद्धान्त'-ग्रन्थ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ९६ ८.००

३. अवचूरिजुदो दव्वसङ्गहो

प्रा.जै.वि.ग्र.मा. [४]

इस ग्रन्थ के रचयिता आचार्य श्रीनेमिचन्द्र हैं। यह जैन-शास्त्र का 'द्रव्यसङ्ग्रह' ग्रन्थ है। इसकी रचना पद्यबद्ध-रूप में प्राकृत-भाषा में हुई है और इसका प्रकाशन 'अवचूरि' नामक संस्कृत-टीका के साथ हुआ है।

आकार : रायल, पृ.सं. ७२ ७.००

४. प्राकृतप्रकाशः (द्वितीय संस्करण)

स.भ.ग्र.मा. [१०२]

प्राकृत-व्याकरण के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रणेता आचार्य वररुचि जी हैं। इस ग्रन्थ का प्रकाशन सञ्जीवनी, सुबोधिनी, मनोरमा, प्राकृतमञ्जरी टीकाओं तथा हिन्दी-भाषानुवाद के साथ किया गया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ६४८ २५०.००

५. षड्दर्शनेषु प्रमाणप्रमेयसमुच्चयः

प्रा.जै.वि.ग्र.मा. [५] ISBN : 81-7270-029-5

जैन दार्शनिक अनन्तवीर्याचार्य द्वारा प्रणीत इस महत्त्वपूर्ण लघु-ग्रन्थ में सभी दर्शनों के प्रमाण एवं प्रमेय का अत्यन्त सरल भाषा में विवेचन किया गया है। इसका सम्पादन कुमार अनेकान्त जैन ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. २४ १०.००

६. गाथासप्तशती

स.भ.ग्र.मा. [१३९] ISBN : 81-7270-023-7

महाकवि श्री सातवाहन 'हाल' द्वारा प्रणीत इस महनीय ग्रन्थ का प्रकाशन भट्ट श्री मथुरानाथ शर्मा द्वारा प्रणीत प्राकृत-गाथासप्तशती की छायारूप 'संस्कृतगाथासप्तशती' एवं 'व्यङ्ग्यसर्वङ्कषा' संस्कृत-व्याख्या के साथ किया गया है। इसका सम्पादन डॉ. उमापति उपाध्याय ने किया है।

आकार : रायल, पृ.सं. ४८८ ४००.००

७. संवेग-चूडामणि

प्रा.जै.वि.ग्र.मा. [६] ISBN : 81-7270-158-6

प्राकृतभाषा में निबद्ध दुर्लभ इस ग्रन्थ का प्रकाशन हिन्दी भाषानुवाद के साथ किया गया है। इसके अनुवादक एवं सम्पादक डॉ. अनेकान्त कुमार जैन हैं।

आकार : रायल, पृ.सं. १६ १६.००



१८. विश्वविद्यालय वार्ता

सारस्वत संस्करणमाला के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाली यह त्रैमासिक पत्रिका है। इसमें विश्वविद्यालयीय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों की गतिविधियों के साथ 'अतीत के वातायन से' 'श्रुतिमन्थन', 'प्रेरक प्रसङ्ग' सदृश स्तम्भों में निरन्तर प्रेरणा, स्फूर्ति एवं नूतन उन्मेष देने वाली सामग्री संयोजित कर इसे प्रकाशित किया जाता है। इसका प्रथम पुष्प संयुक्ताङ्क के रूप में प्रकाशित कर इसमें अप्रैल, २००२ से फरवरी, २००४ तक के सारस्वत अनुष्ठानों को अनुगुम्फित किया गया है। द्वितीय पुष्प '४२वाँ अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन विशेषाङ्क' के रूप में प्रकाशित हुआ है। तृतीय पुष्प को ४२वाँ अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन-स्मृति-विशेषाङ्क का स्वरूप प्रदान किया गया है।

द्वितीय वर्ष के प्रथम अङ्क (अप्रैल-जून, २००५ ई.) को सामान्य रूप से विश्वविद्यालयीय तथा सम्बद्ध महाविद्यालयों की गतिविधियों से संयोजित कर प्रकाशित किया गया है।

आकार : डिमाई, पृ.सं. ८० १००.००



प्रकाशनों के विक्रय के नियम

१. विश्वविद्यालय के प्रकाशन पुस्तकादेश के अनुसार बी.पी.पी., रेलवे पार्सल द्वारा भेजे जाते हैं। पुस्तकें प्राप्यक (बिल) पर भी दी जाती हैं।प्राप्यक (बिल) पर प्रदत्त पुस्तकों का भुगतान तीन माह में आना आवश्यक है।

२. प्रेषित पुस्तकों का भुगतान नगद अथवा बैंकड्राफ्ट, जिसका भुगतान वाराणसी में हो सके, के माध्यम से स्वीकार किया जाता है।

३. रेखाङ्कित बैंकड्राफ्ट, **'वित्त अधिकारी,सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी'** के पक्ष में देय होना अपेक्षित है और रजिस्ट्री द्वारा उसे **'विक्रय-अधिकारी'** के पते पर प्रेषित करना चाहिए। धनादेश (मनीआर्डर) लेने का नियम नहीं है।

४. पैकिंग तथा अन्य अपेक्षित डाक-व्यय ग्राहक को स्वयं वहन करना पड़ेगा।

५. रेलवे पार्सल द्वारा प्रकाशनों को मँगाने पर निकटतम रेलवे स्टेशन का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

६. पुस्तकादेश भेजते समय प्रकाशनों की सिरीज-संख्या, क्रम-संख्या तथा ग्रन्थों के नाम का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

७. पुस्तकें पूर्ण सावधानीपूर्वक पैकिंग करके भेजी जाती हैं। मार्ग में किन्हीं कारणों से पैकेट के क्षतिग्रस्त हो जाने पर उस क्षति के लिए विश्वविद्यालय उत्तरदायी नहीं होगा। बिके हुए प्रकाशन वापस नहीं लिये जाते।

८. प्रकाशनों के क्रय से सम्बद्ध पत्राचार **'विक्रय अधिकारी' सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी-२२१००२'** के पते पर किया जाना चाहिए।

९. इस विश्वविद्यालय के विक्रय-विभाग से नगद धन जमा करके अपेक्षित प्रकाशनों का क्रय किया जा सकता है। ग्राहकों की सुविधा के लिए विक्रय-विभाग सामान्य कार्य-दिवसों में **प्रातः १०.३० बजे से सायंकाल ४.३० बजे तक** तथा **ग्रीष्म-ऋतु में प्रातः ७.०० बजे से दोपहर १.०० बजे तक** धन जमा करके अपेक्षित प्रकाशन तुरन्त ग्राहकों को सुलभ कराता है।

१०. प्रकाशनों के विक्रय से सम्बन्धित सभी प्रकार की नगद धनराशि विश्वविद्यालय के **"विक्रय-विभाग"** में ही जमा की जा सकती है। सीधे लेखा-विभाग में प्रकाशनों के लिए धन जमा करने का नियम नहीं है।

११. प्रकाशनों की सूची निःशुल्क विक्रय-विभाग से मँगायी जा सकती है।

प्रकाशनों के विक्रय के नियम

(क) सभी संस्थाओं, पुस्तकालयों, सरकारी विभागों तथा सामान्य ग्राहकों को एक साथ एक बिल पर ग्रन्थों के क्रय पर निम्नलिखित प्रकार से कमीशन दिया जाता है—

क्रय-राशि	देय छूट (कमीशन) प्रतिशत में
१०० रू. तक	१५
१०१ रू. से ५०० रू. तक	२०
५०१ रू. से १००० रू. तक	२५
१००१ रू. से ३००० रू. तक	३०
३००० रू. से अधिक पर	४०

(ख) पुस्तक-विक्रेताओं के लिए

५०० रू. तक	२५
५०१ रू. से १००० रू. तक	३०
१००१ रू. से ३००० रू. तक	३५
३००० रू. से अधिक पर	४०

(ग) अनुसन्धान-पत्रिका "सारस्वती सुषमा" तथा 'दृक्सिद्धपञ्चाङ्ग' पर निम्न प्रकार से छूट (कमीशन) प्रदान किया जाता है—

विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली अनुसन्धान-पत्रिका 'सारस्वती सुषमा' के प्राचीन अङ्कों (करेण्ट वर्ष के अङ्कों को छोड़कर) तथा पञ्चाङ्ग के क्रय पर सर्वसाधारण ग्राहकों को १० प्रतिशत तथा पुस्तक-विक्रेताओं को २५ प्रतिशत की छूट दी जाती है।

प्रकाशक
डॉ. हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी
निदेशक, प्रकाशन-संस्थान
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी-२२१००२
दूरभाष - २२०६३६४

प्राप्ति-स्थान एवं पत्रव्यवहार-संकेत
डॉ. पद्माकर मिश्र
विक्रय अधिकारी
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी-२ उ.प्र. (भारत)
दूरभाष - २२०२१९५
E-mail : sale_ossvns@sify.com
Website : www.sanskrituniversityvaranasi.com



भारतीय संस्कृति के नवोन्मेष में युगान्तरकारी प्रयास

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय का 'सरस्वतीभवन' पुस्तकालय हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के सङ्ग्रह के क्षेत्र में विश्वविख्यात है। इस पुस्तकालय में १७९१ ई. से १९८१ ई. के मध्य कुल १,११,१३२ हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का सङ्ग्रह हुआ। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के पूर्व इस संस्था का नाम 'राजकीय संस्कृत महाविद्यालय' था, जिसकी स्थापना १७९१ ई. में हुई थी। इस प्रकार लगभग २०० वर्षों की अवधि में इस संस्था ने देश के कोने-कोने में संस्कृत-पण्डितों की टोलियाँ भेज-भेजकर प्रभूत धनराशि का व्यय करते हुए इन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का सङ्ग्रह कराया है।

यहाँ यह सूचित करते हुए महान् हर्ष हो रहा है कि 'सरस्वतीभवन' पुस्तकालय में संगृहीत हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की 'विवरणपञ्जिका' (कैटलॉग) के ३१ भाग अब तक प्रकाशित किये जा चुके हैं। इन ३१ भागों में जिन विषयों के विवरण प्रकाशित हैं, वे निम्न हैं–

१. वेद, उपनिषद्	–	४ खण्ड
२. कर्मकाण्ड	–	४ खण्ड
३. धर्मशास्त्र	–	२ खण्ड
४. पुराणेतिहास और गीता	–	२ खण्ड
५. स्तोत्र-साहित्य	–	४ खण्ड
६. तन्त्रशास्त्र	–	३ खण्ड
७. सांख्ययोग, पूर्वमीमांसा तथा वेदान्तदर्शन	–	२ खण्ड
८. न्यायवैशेषिक-दर्शन	–	२ खण्ड
९. ज्यौतिषशास्त्र	–	२ खण्ड
१०. व्याकरणशास्त्र	–	१ खण्ड
११. साहित्यशास्त्र	–	२ खण्ड
१२. जैनदर्शन, भक्तिसम्प्रदाय, आयुर्वेद, कामशास्त्र आदि	–	३ खण्ड

इस प्रकार यह विश्वविद्यालय युगों-युगों की कालावधि में ऋषियों, मुनियों, आचार्यों तथा मनीषी विद्वानों के द्वारा प्रणीत प्राच्य भारतीय विद्याओं की विभिन्न शाखाओं की संस्कृत-वाङ्मय की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की विवरणपञ्जिकाओं को भारतीय संस्कृति की धरोहर के रूप में विद्वानों, मनीषियों, अनुसन्धाताओं, विचारकों और विश्लेषणकर्त्ताओं के समक्ष प्रस्तुत करते हुए गौरवान्वित हो रहा है। निश्चय ही इन विवरणपञ्जिकाओं के विश्लेषण, चिन्तन तथा अनुसन्धान से प्राच्य-भारतीय विद्याओं के क्षेत्र में हो रहे विश्लेषणों, चिन्तनों और अनुसन्धान-कार्यों को युगान्तरकारी नवोन्मेष प्राप्त होगा।

इन विवरणपञ्जिकाओं के सभी भाग उपलब्ध और सङ्ग्रहणीय हैं।

पण्डित-परिक्रमा

यह सूचित करते हुए महान् हर्ष हो रहा है कि **'दि पण्डित-पत्रिका (काशीविद्यासुधानिधिः)'** की सामग्री लगभग छिहत्तर वर्षों बाद **'पण्डित-परिक्रमा'** एवं **'पण्डित रीविजिटेड'** ग्रन्थमालाओं के अन्तर्गत प्रकाशित हो रही है। अब तक इन ग्रन्थमालाओं में दस ग्रन्थों का प्रकाशन सम्पन्न हुआ है।

'दि पण्डित-पत्रिका (काशीविद्यासुधानिधिः)' का प्रकाशन इस विश्वविद्यालय की पूर्व-संस्था **'राजकीय संस्कृत कालेज'** के द्वारा सन् १८६६ ई. में प्रारम्भ हुआ था। तत्पश्चात् १९१७ ई. पर्यन्त अविच्छिन्न रूप से इसका प्रकाशन होता रहा। उसके पश्चात् यह पत्रिका **'सरस्वतीभवन-ग्रन्थमाला'** एवं **'सरस्वतीभवन-अध्ययनमाला'** नाम से प्रचलित हुई और १९४२ ई. से वही शृङ्खला **'सारस्वती सुषमा'** के नाम से आज तक निरन्तर प्रकाशित हो रही है। इस प्रकार **'दि पण्डित-पत्रिका' ('काशीविद्यासुधानिधिः') 'सरस्वतीभवन-ग्रन्थमाला'** तथा **'सरस्वतीभवन-अध्ययनमाला'** में परिगत हुई और वही **'सारस्वती सुषमा'** में परिणत हुई। यह परिणमन वैसा ही होता गया, जैसा इस विश्वविद्यालय की आदि-संस्था का नाम **'राजकीय संस्कृत महाविद्यालय'** रहा,जो कालान्तर में **'वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय'** में हुआ और पुनः इसका परिणमन **'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय'** में हुआ।

म.म. विट्ठलशास्त्री, म.म. बालशास्त्री एवं पण्डित बेचनराम शर्मा प्रभृति सर्वतन्त्रस्वतन्त्र विद्वानों की लेखनी का विलास **'दि पण्डित-पत्रिका'** के संस्कृत-निबन्धों में अवलोकनीय है। इसी प्रकार **जे.आर.वैलेन्टाइन, जॉन म्योर, आर.टी.एच. ग्रिफिथ, डॉ. जी. थिबो, डॉ. ए.वेनिस एवं मैक्समूलर** प्रभृति स्वनामधन्य विश्वविख्यात मनीषियों के अंग्रेजी-भाषानिबद्ध निबन्ध इसमें प्रकाशित होते रहे।

इस प्रकार की दुर्लभ एवं पाण्डित्यपूर्ण सामग्री के प्रकाशन के विना आधुनिक युग में संस्कृत-साहित्य के विश्लेषण को अधूरा समझते हुए तदानीन्तन कुलपति **आचार्य श्रीविद्यानिवास मिश्र** ने निश्चय किया कि इतिहास के गर्भ में विस्मृत हो चुकी इस बहुमूल्य सामग्री को प्रकाश में लाना है। विश्वविद्यालय के इसी सङ्कल्प का मूर्त्तरूप **'पण्डित-परिक्रमा'** एवं **'पण्डित रीविजिटेड'** ग्रन्थमालाओं में देखा जा सकता है। **'दि पण्डित-पत्रिका'** की सम्पूर्ण सामग्री लगभग पच्चीस खण्डों में प्रकाशित होगी। ये सभी खण्ड अपनी गहन शास्त्रीय उपलब्धियों के कारण संस्कृत साहित्य के समसामयिक चिन्तन को निश्चय ही झंकृत एवं स्पन्दित करेंगे।

अब तक प्रकाशित दसों खण्ड अत्यन्त सङ्ग्रहणीय हैं।

मुद्रक : श्रीजी प्रिंटर्स, नाटी इमली, वाराणसी-२२१००१